सामाजिक अध्ययन

कक्षा - छः

भाग - दो

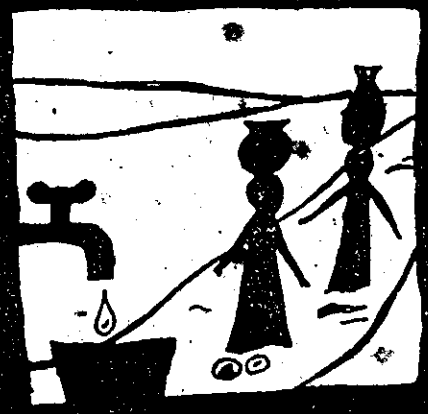

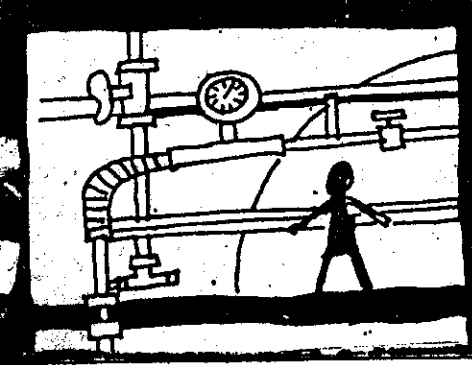

विषय - सूची

नागरिक शास्त्र

पाठ-5 ग्राम पंचायत 1-9

पाठ-6 नगरों में सुविधाओं का प्रबन्ध 10-16

भूगोल

पाठ-5 महाद्वीप और समुद्र, एशिया 17-23

पाठ-6 द्वीपों का देश इण्डोनेशिया 24-33

इतिहास

पाठ-5 पशुपालक लोग 34-43

पाठ-6 खेती करने वाले आर्य 44-50

नागरिक शास्त्र
पाठ-5 ग्राम पंचायत

गांव/शहर में लोगों को कई सुविधाओं की ज़रूरत होती है :

- सड़कों की
- पानी की
- सफाई की
- स्कूल की
- बस या रेलगाड़ी (परिवहन की)
- बाजार की
- बिजली की
- बीमारी के इलाज की

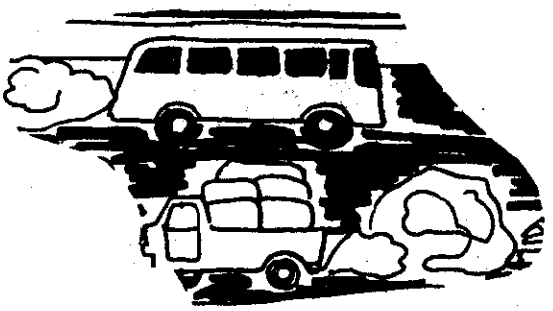

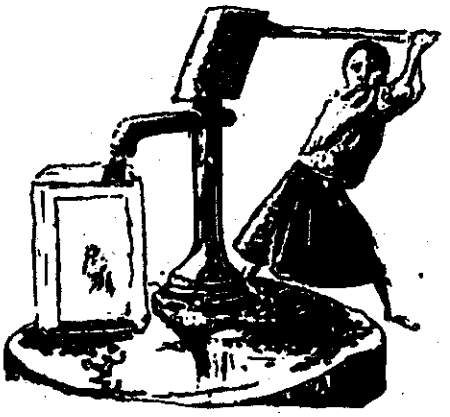

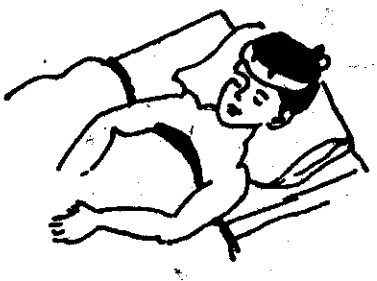

इनमें सेकुछ काम गांव में पंचायत को करने होते हैं और शहर में नगरपालिका/नगरनिगम को। इनके बारे में हम इस पाठ में पढ़ेंगे । ग्राम पंचायत से शुरू करते हैं ।

पंचायत कैसे बनती है

लगभग 1000 से 5000 लोगों पर एक पंचायत होती है। यदि 200-400 लोगों का गाँव हो तो उस गाँव की पंचायत किसी और गाँव के साथ मिलकर बनती है। हर ग्राम पंचायत क्षेत्र को कम से कम 10 और अधिक से अधिक 20 वार्डों में बांटा जाता है।

ग्राम पंचायत के सदस्य पंच कहलाते हैं। हर वार्ड के लोग वोट डालकर (अपना मत देकर) एक पंच चुनते हैं। उस वार्ड में रहने वाले सभी लोग जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो वोट डाल सकते हैं।

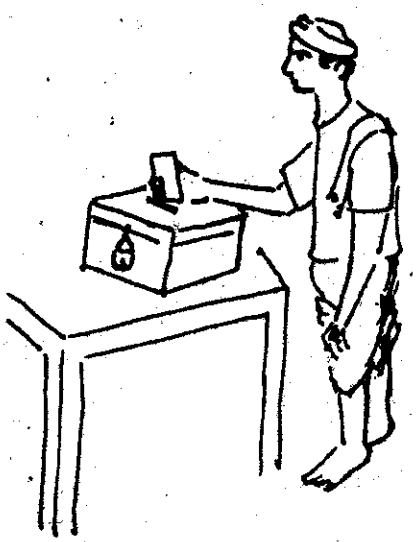

हाँ, यह ज़रूर है कि जो व्यक्ति अपराधी हो या पागल हो उसे वोट डालने नहीं दिया जाता। यदि कोई व्यक्ति एक से अधिक वार्डों में मत दे तो उसके सभी मत बेकार हो जाते हैं।

जिसे भी वोट डालने का अधिकार है, वह पंच के चुनाव के लिए खड़ा भी हो सकता है। जो भी लोग चुनाव में खड़े होना चाहते हैं उन्हें चुनाव के कई दिन पहले अपना नाम चुनाव अधिकारी के पास दर्ज कराना पड़ता है। कोई भी व्यक्ति एक से अधिक वार्डों से पंच का चुनाव नहीं लड़ सकता। वह एक से अधिक पंचायतों का पंच भी नहीं बन सकता।

- अपने गुरुजी से पूछो कि पंचायत के चुनाव कैसे होते हैं? वोट किस प्रकार डलते हैं? वोटों की गिनती किस तरह होती है?

हर पंचायत में कम से कम दो महिला पंच होना आवश्यक है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन-जाति के पंच भी होना ज़रूरी है।

- पता करो तुम्हारी पंचायत में महिला पंच और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के पंच कौन हैं ? वे पंच कैसे बने ?

पंचायत सरपंच और सचिव:-

सब पंच मिलकर सरपंच चुनते हैं । जिस पंच को सबसे अधिक पंच सरपंच बनाना चाहते हैं वह ही सरपंच बनता है । कुछ समय बाद, यदि पंचों को लगता है कि सरपंच ठीक से काम नहीं कर रहा है तो सरपंच को पद से हटा सकते हैं ।

पंच और सरपंच के अलावा, पंचायत का एक सचिव होता है । सचिव चुना नहीं जाता, वह सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है । वह सरकारी नौकर होता है । उसे सरकार से तनख्वाह मिलती है । पंचायत का लेखा-जोखा व हिसाब उसे ही रखना पड़ता है ।

गांव की पंचायतें कई तरह के काम करती हैं ।

ग्राम पंचायत के काम :-

- गांव की सफाई का प्रबंध करना । कचरा आदि फेंकने का प्रबन्ध करना ।
- गांव के अन्दर की सड़कें व रपटें बनवाना और सुधरवाना ।
- गांव में पीने के पानी और कपड़े धोने की जगह का प्रबंध करना ।

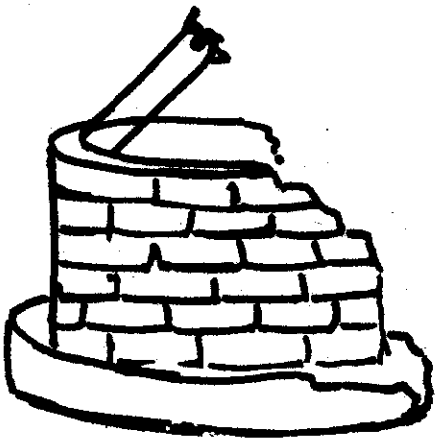

- यदि कोई निर्धन या गरीब व्यक्ति बीमार हो तो उसके इलाज आदि के लिए पैसों का प्रबंध करना ।

- सामाजिक सुरक्षा पेंशन गांव वालों में बांटना ।
- कांजी हाउस (मवेशी घर) का प्रबन्ध करना ।
- यदि किसी परिवार की वजह से मोहल्ला गन्दा हो रहा हो तो पंचायत उससे कह सकती है कि यदि सफाई नहीं करवाई तो पंचायत उससे जुर्माना वसूल करेगी ।

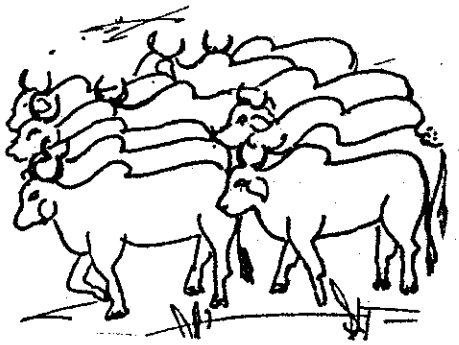

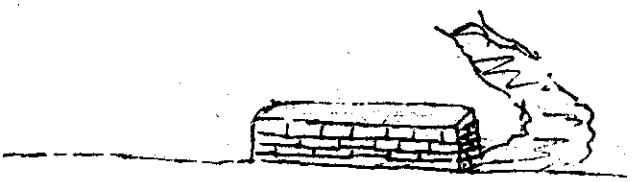

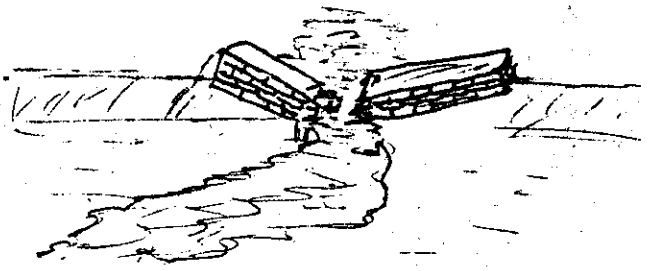

पंचायत के ऐसे करीब 30 कार्य हैं । अपनी पंचायत से पता करो कि उन्हें कौन-कौन से कार्य करने होते हैं ? सभी सरकारी विकास कार्यक्रमों की देखरेख गांव स्तर पर ग्राम पंचायत को करनी होती है । उदाहरण के लिए बाल विकास कार्यक्रम । अपनी पंचायत से पता करो कि आजकल कौन से विकास कार्यक्रम चल रहे हैं ?

पंचायत पूरे गांव के लोगों के लिए ही काम कर सकती है । किसी एक व्यक्ति या एक खास समूह के लिए नहीं ।

ग्राम पंचायत की बैठक :-

पहले के नियमों के अनुसार ग्राम पंचायत को हर महीने कम से कम एक बार बैठक करना ज़रूरी था । जबसे ग्राम पंचायतों को विकास कार्यक्रमों की देख-रेख की ज़िम्मेदारी दी गई है तो आवश्यक हो गया है कि पंचायत महीने में कम से कम दो बार मिले । इन बैठकों में कार्यक्रम कितना आगे बढ़े, उन में क्या दिक्कतें आ रही हैं, उन्हें कैसे दूर किया जाए आदि बातों पर उन्हें विचार करना पड़ता है ।

एक पंचायत 5 साल तक काम करती है । पाँच सालों के बाद पंचायत के चुनाव फिर से होते हैं ।

क्या यह पंचायत की बैठक हो रही है?

पंचायत को पैसे कहां से मिलते हैं:-

यदि पंचायतों को ये सब काम करने हैं तो इन्हें पैसे भी चाहिए । पैसे इकट्ठे करने के लिए पंचायत कई प्रकार के कर लगाती है ।

दुकानों पर कर:-

यदि गाँव में कुछ दुकान हैं तो दुकानदार को हर साल अपनी दुकान लगाने का कर पंचायत को देना पड़ता है ।

भूमि कर:-

सरकार किसानों से भूमि कर लेती है । साथ ही पंचायत भी उनसे उनकी भूमि पर कुछ कर वसूल करती है ।

मवेशी बेचने पर कर:-

यदि मेले या हाट में मवेशी बिकते हैं, तो पंचायत उस पर कर लेती है । कांजी हाउस से मवेशी छुड़वाने के पैसे पंचायत लेती है ।

यदि कुछ मवेशी कांजी हाउस में रह गए तो उनकी नीलामी से भी पंचायत को पैसे मिलते हैं ।

मकान पर कर:-

गांव में जिनके पक्के मकान हैं, उन्हें पंचायत को हर साल कर देना पड़ता है ।

मेलों पर कर:-

जो लोग मेले में दुकान लगाते हैं उन्हें वहां की पंचायत को कर देना पड़ता है । जो लोग मेले में आते हैं, उनसे अंदर आने के पैसे लिए जाते हैं । इस पैसेका कुछ भाग पंचायत को कर में दिया जाता है ।

पानी, बिजली पर कर:-

यदि पंचायत नलों का या बिजली का प्रबंध करती है तो वह पानी और बिजली पर टैक्स ले सकती है ।

सरकारी अनुदान:-

इन सब करों के अलावा पंचायतों को सरकार से अनुदान (पैसे) मिलते हैं। पंचायत की आमदनी का मुख्य भाग सरकारी अनुदान से ही आता है। यदि किसी पंचायत को अपने गाँव में कुछ खास काम करवाना है, जैसे नया कुंआ बनवाना या सड़क बनवाना, तो उसे सरकार को सूचित करना पड़ता है कि हमें इस काम के लिये इतने पैसे चाहिये। उदाहरण के लिये यदि किसी पंचायत को अपने गाँव में हैंडपंप लगवाना है तो उसे ब्लॉक विकास अधिकारी (जो कि एक सरकारी नौकर है) को सूचित करना पड़ता है कि हमें हैंड पंप के लिये 2,000रूपये चाहिए। यदि सरकार पूरा पैसा नहीं दे सकती तो पंचायत को बाकी पैसे गाँव के लोगों से इकट्ठे करने पड़ते हैं।

ग्राम पंचायत का लेखा-जोखा या हिसाब-किताब :-

पंचायत के पास साल में

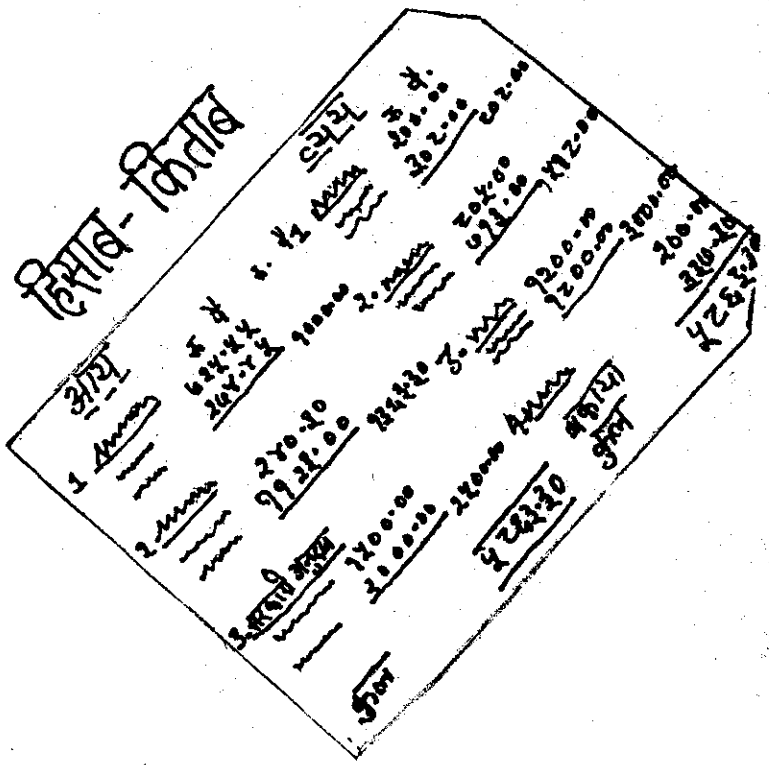

कितने पैसे आए, कितने खर्च हुए, किन चीजों पर खर्च हुए इन सबका हिसाब-किताब रखना पड़ता है। ग्राम पंचायत को हर साल के हिसाब-किताब की जाँच एक लेखा अधिकारी से करवानी पड़ती है। इस जाँच को संपरीक्षण भी कहते हैं। इस हिसाब को देखने का गाँव के किसी भी नागरिक को अधिकार है।

हर साल पंचायत के पंचों को मिलकर अगले साल के खर्च की योजना (बजट) बनानी पड़ती है। बजट में जिन चीज़ों पर खर्चा दिखाया गया है उन्हीं पर अगले साल पैसे खर्च हो सकते हैं।

पंचायत विभाग:-

पंचायत में काम ठीक तरह से हो, इसकी देख-रेख के लिए एक सरकारी विभाग बनाया गया है, जिसे "पंचायत विभाग" या "स्थानीय शासन विभाग" कहते हैं। इस विभाग का पंचायत इन्स्पेक्टर, पंचायतों का मुआएना करके जिलाधीश को रिपोर्ट देता है। यदि पंचायत ठीक से काम नहीं करती तो जिलाधीश उसे भंग कर सकता है। वह निर्देश दे सकता है कि अब पंचायत काम नहीं कर सकती। उसे पैसे भी नहीं मिलेंगे और उसके अधिकार भी नहीं रहेंगे। यदि किसी गाँव के लोग अपनी पंचायत से संतुष्ट नहीं हैं तो वे पंचायत इन्स्पेक्टर या जिलाधीश से शिकायत कर सकते हैं।

प्रश्न

प्रश्न 1 तुम्हारी पंचायत के चुनाव कौन-कौन से वार्ड से होते हैं? नाम लिखो। क्या तुम्हारी पंचायत में कोई और गाँव भी आता है ?

प्रश्न 2 सरपंच कौन चुनता है ?

प्रश्न 3 यदि तुम पंचों के चुनाव में वोट डालने जाओ और तुम्हें रोका जाए तो क्या यह सही है ? यदि तुम्हारी माँ को रोका जाए तो ?

प्रश्न 4 तुम्हारी पंचायत में कितने पंच हैं ? सरपंच कौन हैं ?

प्रश्न 5 महिला व अनुसूचित जाति का पंच होना क्यों ज़रूरी है? सोचकर बताओ।

प्रश्न 6 तुम्हारी पंचायत की पिछली बैठक कब हुई थी ?

प्रश्न 7 तुम्हारी पंचायत ने पिछले एक साल में क्या-क्या काम किये ?

प्रश्न 8 एक पंचायत के पास 15,000 रू0 थे। उन्होंने एक साल में इन चीजों पर खर्च किया।

हैंड पंप	3,000 रू0
कुएं का चबूतरा कपड़े धोने के लिए	2,000 रू0
सड़क की मरम्मत	3,200 रू0
स्कूल के लिए फर्शी	4,800 रू0
बाकी खर्च (कागज, अन्य चीजों के लिए)	2,000 रू0

यदि तुम बड़े होकर पंच बनो और तुम्हारी पंचायत के पास 20,000 रू0 हों तो तुम इन रुपयों से गांव के लिए क्या-क्या करोगे ? ऊपर दी गई तालिका जैसी बनाओ।

प्रश्न 9 यदि तुम्हारी पंचायत ठीक से काम नहीं कर रही है तो तुम क्या करोगे ? चर्चा करो।

1980 तक यह नियम था कि पंचायत के सारे मतदाताओं की एक ग्राम सभा होगी जिसकी बैठक साल में कम से कम दो बार होगी। पंचायत को ग्राम सभा में पिछले वर्ष का हिसाब और अगले वर्ष का बजट पेश करना होता था। 1981 में नियम बदल गया, नये नियम के अनुसार अब ग्राम सभा जरूरी नहीं है। आपस में चर्चा करके सोचो कि ऐसा क्यों हुआ ? अपने गुरूजी और माता-पिता से भी पूछो कि क्या 1980 के पहले कभी पंचायत का हिसाब-किताब ग्राम सभा में पेश किया गया था ?

पाठ-6 नगरों में सुविधाओं का प्रबंध

हमने देखा कि गांव में पंचायत होती है और उसे क्या-क्या काम करने चाहिए । नगरों या शहरों में गांव से बहुत अधिक लोग रहते हैं ।

- शहर और गांव में और क्या-क्या अंतर हैं? लिखो।

शहरों में नगर पालिका या नगर निगम होती है जो कई चीजों का प्रबंध करती है । यदि 5,000 से अधिक लोग एक जगह रहते हों तो वहां नगर पालिका बन सकती है । 1,00,000 से अधिक जनसंख्या पर नगर निगम होती है ।

शहरों में नलों में पानी आता है किसी मोहल्ले में साढ़े छह बजे, किसी मोहल्ले में आठ बजे । शाम को भी पानी आने का समय तय है। कई शहरों में दिन भर पानी आता है । पानी किस समय किस मोहल्ले में दिया जाये, नल कहां लगवाया जाये, यह सब प्रबंध नगर पालिका के लोग करते हैं । पाईप बिछवाना, पानी की टंकी की देख-रेख आदि काम भी नगर पालिका या नगर निगम करती है । जिन मोहल्लों में नल नहीं हों वहां के लोग नगर पालिका को कह सकते हैं । नगर पालिका को चाहिए कि उस मोहल्ले के लिए पानी का प्रबन्ध करे ।

शहरों में खूब सारे लोग रहते हैं। हर घर में कचरा होता है जो लोग बाहर फेंकते हैं। इस तरह हर मोहल्ले में कचरा इकट्ठा हो जाता है। इस कचरे को समय-समय पर फिंकवाना पड़ता है। नगर पालिका/नगर निगम के कर्मचारी एक वाहन में आकर ये कचरा इकट्ठा करते हैं, शहर के बाहर ले जाकर जलाते हैं। मोहल्लों की नालियां व सड़कें साफ करवाना भी नगर पालिका का काम है। इन कामों के लिए सफाई कर्मचारी रखे जाते हैं। यदि किसी मोहल्ले की सफाई नहीं की जा रही हो तो उस मोहल्ले के लोग नगरपालिका को कह सकते हैं।

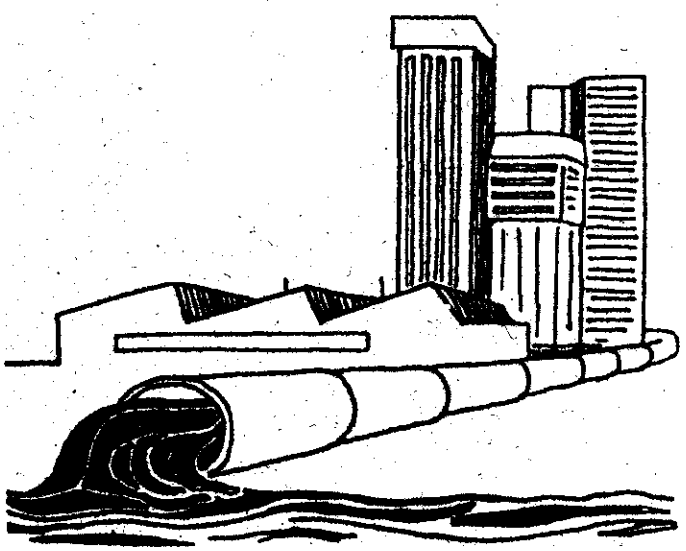

इसी तरह शहर के अन्दर की सड़कों को ठीक करवाना, अच्छी सड़कें बनवाना, बिजली के खम्भे लगवाना यह सब नगरपालिका व

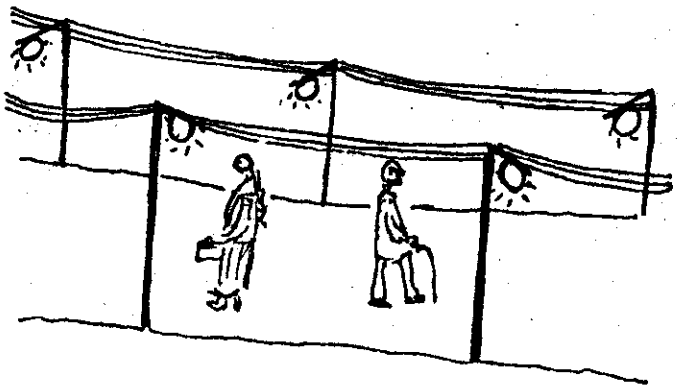

नगर निगम के काम हैं। हैजा, चेचक जैसी बीमारियों के टीके लगवाने का काम भी नगर पालिका को करने चाहिए। नगरपालिका पुस्तकालय व शाला भी चला सकती है।

- यदि तुम शहर में रहते हो तो बताओ तुम्हारी नगर पालिका/नगर निगम क्या-क्या काम करती है? कौन से काम नहीं करती है?

अलग-अलग कामों के लिए नगरपालिका के अलग-अलग विभाग होते हैं, जिनमें सरकारी कर्मचारी काम करते हैं ।

- पता करो नगर पालिका के ये विभाग क्या करते हैं ? शिक्षा विभाग, पानी व बिजली विभाग इंजीनियरिंग विभाग, चुंगी विभाग और स्वास्थ्य विभाग ।

इन विभागों के कामों की देख-रेख के लिए एक सरकारी कर्मचारी होता है जो कार्यपालिक अधिकारी कहलाता है ।

नगर पालिका कैसे बनती है ।

पंचायत की तरह नगर पालिका व नगर निगम के सदस्य भी चुने जाते हैं । शहरों के लोग नगर पालिका/नगर निगम सदस्य चुनते हैं।

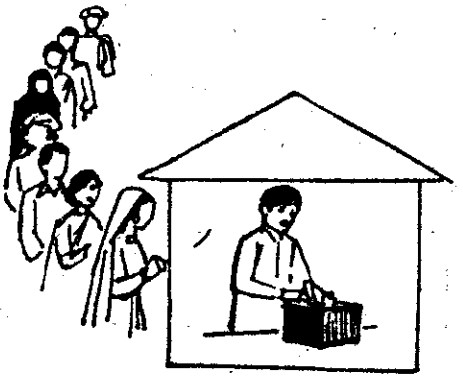

नगर पालिका

- 5,000 से 1,00,000 जनसंख्या पर एक नगर पालिका ।
- 15 से 60 सदस्य ।
- नगर पालिका का एक अध्यक्ष होता है ।

नगर निगम

- 1,00,000 से ऊपर जन-संख्या पर नगर निगम ।
- 50 से 150 सदस्य ।
- नगर निगम का अध्यक्ष महापौर या मेयर कहलाता है ।

नगर पालिका और नगर निगम में:-

- शहर वार्ड में बाँटा जाता है ।
- हर वार्ड का एक सदस्य चुना जाता है ।
- नगर पालिका या नगर निगम सदस्य होने के लिए कम से कम 25 वर्ष का होना ज़रूरी है ।
- कम से कम एक महिला सदस्य होती है ।
- हरिजन जनसंख्या के अनुसार हरिजन सदस्य होते हैं ।
- शहर के सब लोग जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो और जो अपराधी या पागल न हों, वोट डाल सकते हैं ।

नगर पालिका व नगर निगम को पैसे कहाँ से मिलते हैं :-

उपर दिए गए कामों के लिए नगर पालिका / नगर निगम को इस प्रकार पैसे मिलते हैं :-

1. टैक्स:-

नगर पालिका व नगर निगम निम्नलिखित कर या टैक्स ले सकते हैं :-

(क) शहर में आने और जाने वाली वस्तुओं पर टैक्स लगता है, लोग भी यदि बस या टैक्सी

में आते-जाते हैं, (निजी वाहन में नहीं) तो उन पर भी टैक्स लगता है । इस टैक्स को चुंगी कहते हैं । हर शहर की सीमा पर नाका होता है जहां चुंगी के पैसे चुकाए जाते हैं ।

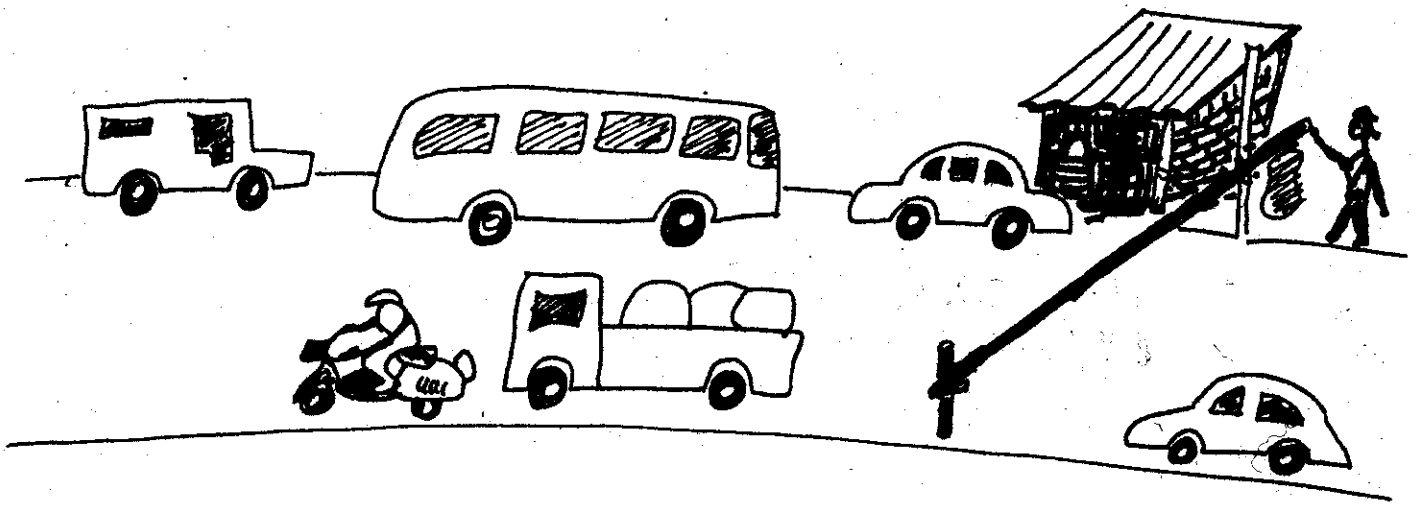

(ख) जिनके पास शहर के अंदर जमीन या मकान हों उन्हें नगर पालिका को हर साल कर देना पड़ता है, जिसकी बड़ी जमीन या बड़ा मकान हुआ उसे अधिक कर देना पड़ता है ।

(ग) दुकानदारों को भी नगर पालिका को हर साल टैक्स देना पड़ता है । यह उनकी दुकान पर टैक्स होता है, बिक्री पर नहीं ।

(घ) शहर में जो लोग कोई काम या धन्धा करते हैं उन्हें नगर पालिका या नगर निगम को अपने धन्धे पर भी टैक्स देना पड़ता है ।

(च) नगर पालिका जो पानी व सड़कों की बिजली का प्रबंध करती है उस पर भी टैक्स लेती है ।

चुंगी के अलावा सभी टैक्स लोगों को नगर पालिका या नगर निगम दफ्तर में जाकर जमा करने होते हैं ।

2. सरकारी अनुदान:-

टैक्स के अलावा नगर पालिका और नगर निगम को सरकार द्वारा अनुदान मिलता है। किस नगर पालिका या नगर निगम को कितना अनुदान मिलेगा यह प्रदेश सरकार तय करती है। आम तौर पर बड़े शहरों की नगर पालिका और नगर निगम को अधिक अनुदान मिलना चाहिए। इसके अलावा जो शहर प्रदेश की राजधानी होता है या उद्योग का केन्द्र होता है उन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पर्यटन केन्द्रों § जहां दूर-दूर से लोग कोई एतिहासिक या सुंदर स्थल देखने आते हैं § पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

3. लोन या उधार:-

पैसों की अधिक जरूरत पड़ने पर नगर पालिका प्रदेश सरकार से अनुमति लेकर सरकार या बैंक से पैसे उधार ले सकती है।

यदि नगर पालिका ठीक से काम नहीं कर रही हो तो उस शहर के लोग "नगर पालिका अधिकारी" या फिर प्रदेश सरकार के "स्थानीय शासन विभाग" को शिकायत कर सकते हैं। "स्थानीय शासन विभाग" ही नगर पालिका और नगर निगम भंग कर सकती है।

प्रश्न

प्रश्न। इन में से कहां पर पंचायत होगी, कहां नगर पालिका और कहां नगर निगम ?

	क	ख	ग	घ
जनसंख्या	12,208	235	2,500	2,03,883

प्रश्न 2 क्या 21 वर्ष का व्यक्ति नगर पालिका के चुनाव में वोट डाल सकता है ? क्या वह नगर पालिका सदस्य बन सकता है ?

प्रश्न 3 यदि तुम शहर में रहते हो तो पता करो क्या तुम्हारे शहर में "विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण" है ? यदि हाँ, तो पता करो ये किस कारण बनाई गई ? क्या "विकास प्राधिकरण" (साडा) के साथ-साथ नगर पालिका या नगर निगम भी है ? यदि है, तो वे क्या अलग-अलग काम करते हैं ? जहाँ नगर पालिका नहीं है क्या विकास प्राधिकरण ही नगर पालिका के कार्य करती है ? क्या विकास प्राधिकरण के लोग भी चुने जाते हैं ?

प्रश्न 4 यदि तुम शहर में रहते हो, तो पता करो कि तुम्हारे नगर पालिका अध्यक्ष / नगर निगम हो तो महापौर / कौन हैं ? तुम्हारे नगर पालिका या नगर निगम में कितने सदस्य हैं ? तुम्हारेवार्ड का नगर पालिका या नगर निगम सदस्य कौन है ?

प्रश्न 5 तुम्हारे जिले में कौन-कौन से शहरों में नगर पालिका हैं ? और किन शहरों में नगर निगम ?

प्रश्न 6 यदि तुम्हारी नगर पालिका या नगर निगम ठीक से काम नहीं कर रही हो तो तुम क्या करोगे ?

भूगोल

पाठ-5

महाद्वीप और समुद्र

पृथ्वी पर जमीन और पानी है। पृथ्वी पर जमीन के बहुत बड़े टुकड़ों को महाद्वीप कहा जाता है। क्या इन्हें तुम ग्लोब या संसार के मानचित्र पर पहचान सकते हो ?

जैसे तुम्हारे सब के अलग-अलग नाम हैं वैसे ही इन महाद्वीपों के भी हमने नाम दिए हैं। इनके नाम तुम दिए गए मानचित्र पर लिखो। इन्हें अलग-अलग रंगों से रंग भी लो।

एशिया और यूरोप जुड़े हुए महाद्वीप हैं, जिसे यूरेशिया भी कहते हैं। इनकी सीमा यूराल नाम के पर्वत - और कैस्पियन सागर व काले सागर से बनती है। इन्हें संसार के मानचित्र पर देखो। (5.1)

चित्र 5-1 संसार का मानचित्र

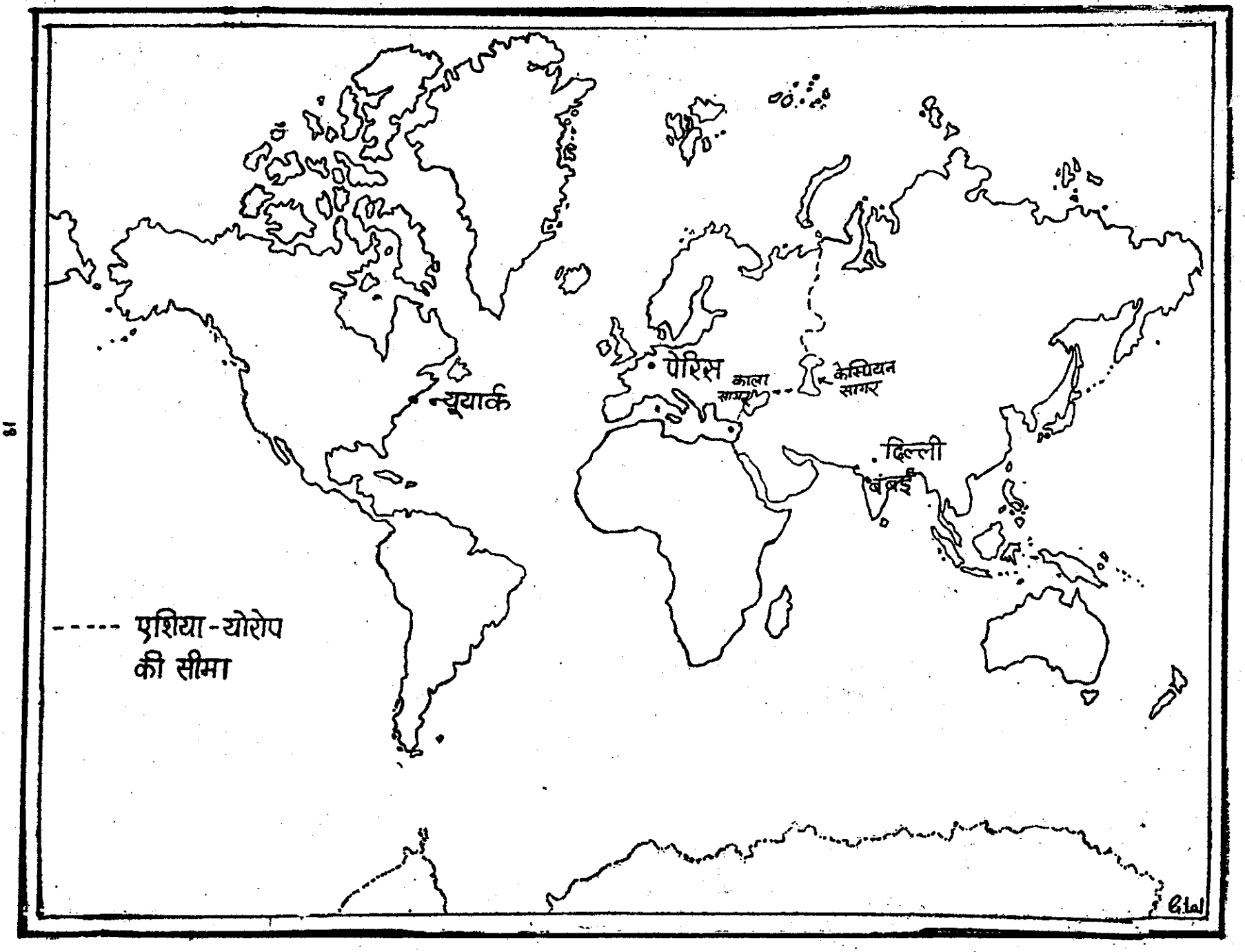

ग्लोब या संसार के मानचित्र को देखकर बताओ कि पृथ्वी पर इन महाद्वीपों के अतिरिक्त हिस्सा नीले रंग से क्यों रंगा गया है ?

इस मानचित्र में जल को नीले रंग से और स्थल (जमीन) को किसी और रंग से रंग लो । नीले रंग से रंगे हुए ये बड़े - बड़े समुद्र हैं । इन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है । संसार का मानचित्र देखकर इन महासागरों के नाम अपने मानचित्र में लिखो ।

तालाब और नदी को तुम कैसे पार कर सकते हो ? क्या ऐसे ही तुम सागरों को पार कर सकते हो ? सागर बहुत गहरे भी हैं । वहाँ हवा जब चलती है तो उँची लहरें उठती हैं। एक जगह से दूसरी जगह जाने में कई हफ्ते तक लग जाते हैं । सागरों से यात्रा करने पर कई दिन तक चारों ओर केवल पानी ही पानी दिखता है, जमीन दिखती ही नहीं । फिर बड़े सागरों को पार करने के लिए बड़े जहाजों की आवश्यकता नहीं होगी ?(चित्र 5.3)

चित्र में देखो, समुद्र में चलने वाले जहाज कितने बड़े हैं। इनमें महीनों यात्रा करने का पूरा प्रबन्ध रहता है ।

अब बताओ कि यदि तुम्हें दिल्ली से यूरोप में पेरिस जाना है तो स्थल या सागर- कहाँ से जा सकते हो ? बम्बई से यदि उत्तरी अमेरिका में न्यूयार्क जाना है तो क्या स्थल से होते हुए पहुंच सकते हो ?

मानचित्र तथा ग्लोब को तुलना करके बताओ कि उत्तरी अमेरिका से एशिया पहुंचने के लिए तुम्हें सबसे सीधा और नजदीक का रास्ता कहाँ से मिलेगा ?

आओ इस किताब में एशिया नाम के महाद्वीप और उसके आसपास के सागरों के बारे में पढ़ें ।

चित्र 5.3 समुद्र में चलने वाले जहाज

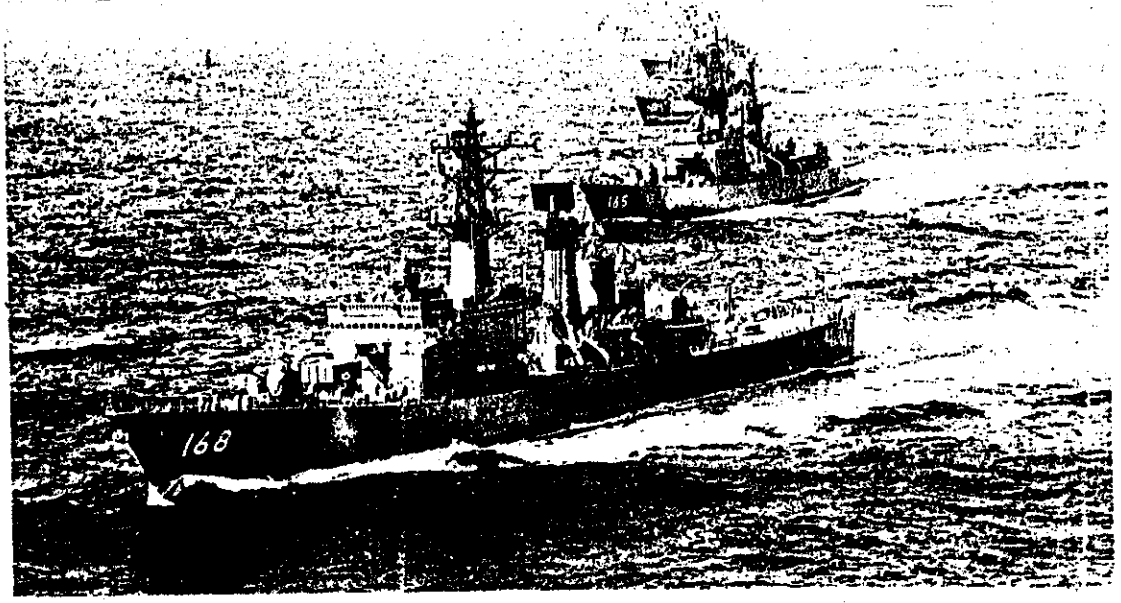

चित्र 5·5 ऐशिया का राजनैतिक मानचित्र

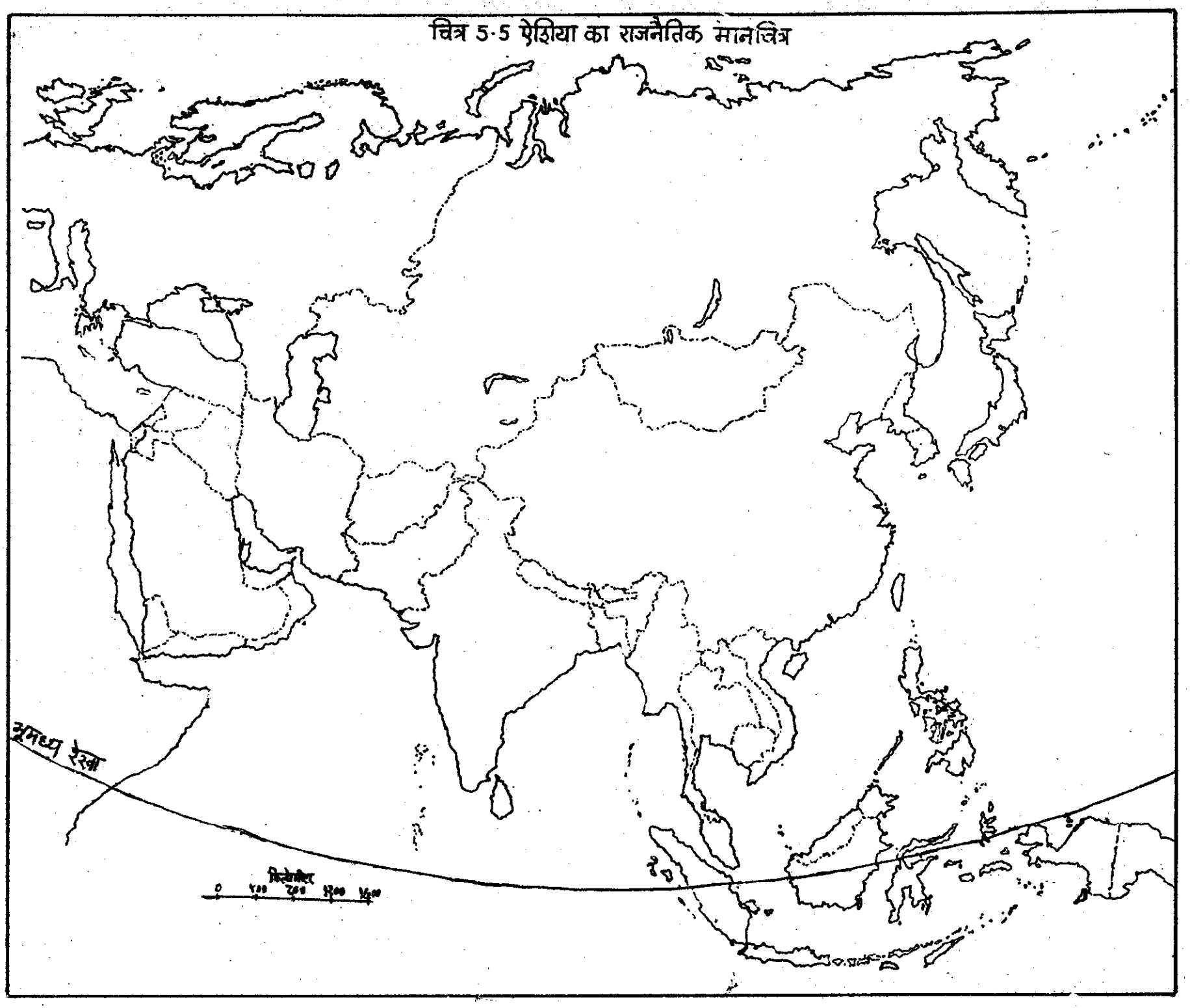

एशिया

एशिया के आकार की तुलना अन्य महाद्वीपों से करो । वह किन महाद्वीपों से बड़ा है ? मानचित्र देखकर बताओ भारत किस महाद्वीप का हिस्सा है ? वह इस महाद्वीप का कितना छोटा हिस्सा है ।

एशिया के मानचित्र को दीवार पर टाँगो; एशिया में भारत के अतिरिक्त बहुत से देश हैं, जिन्हें अलग-अलग रंगों से दिखाया गया है । मानचित्र में देशों को रंगने के लिए कितने सारे रंगों का उपयोग किया गया है ! क्या कोई देश जो एक दूसरे को छूते हों एक ही रंग से रंगे गए हैं ?

अपने मानचित्र में तुम भी एशिया के देशों को अलग-अलग रंगों से रंग लो और इनके नाम लिख लो । इसके लिए तुम मानचित्र नं॰ 5॰4 से मदद ले सकते हो ।

मानचित्र को ध्यान से देखो, इसमें कौन सा देश सबसे बड़ा है ?

नीचे दी गई तालिका में भारत के उत्तर, पूर्व तथा पश्चिम के देशों की सूची बनाओ:

भारत के	उत्तर के देश
पूर्व के देश	पश्चिम के देश

भारत के दक्षिण में क्या है ?

सागरों से घिरा एशिया : भारत की सीमा का काफी बड़ा हिस्सा समुद्र को छूता है। दीवार पर टँगे मानचित्र में इन सागरों के नाम भी लिखे हैं । भारत की सीमा को छूने वाले कौन-कौन से समुद्र हैं ?

तुमने देखा कि एशिया भी सागर से घिरा है : एशिया को घेरे हुए कौन-कौन से महासागर हैं ? इनके नाम मानचित्र में देखो और अपने मानचित्र में लिखो ।

तुमने पिछले साल पढ़ा होगा कि भारत के पास समुद्र में कई द्वीप (या टापू) हैं । इस तरह के अनेक द्वीपों के समूह दक्षिणी पूर्वी एशिया में हैं । मानचित्र में से ऐसे कई द्वीपों के नाम जानो । इन सभी द्वीपों को देखकर तुम यह जान गए होंगे कि द्वीप वे छोटे भू-भाग हैं जिनके चारों ओर समुद्र है ।

पाठ 6 द्वीपों का देश इंडोनेशिया

भारत के दक्षिण पूर्व में इंडोनेशिया नामक देश है । इसमें 10,000 से अधिक द्वीप हैं । इन द्वीपों के चारों ओर समुद्र है । द्वीपों पर पहुंचने के लिए समुद्र को जहाजों या, बड़ी नावों से पार करना होता है । कितना मजेदार लगता होगा कि सड़क या रेल के बजाय देश के विभिन्न भागों तक पहुंचने के लिए जहाज, स्टीमर या नाव की सवारी करनी होती हो । पर वहां के लोगों को तो इसकी आदत पड़ गई होगी ।

इंडोनेशिया के बड़े द्वीपों के नाम मानचित्र में देखकर बताओ । यह भी बताओ कि इनके उत्तर तथा दक्षिण में कौन से महासागर हैं ? (चित्र 6·1)

चित्र 6·1 इंडोनेशिया

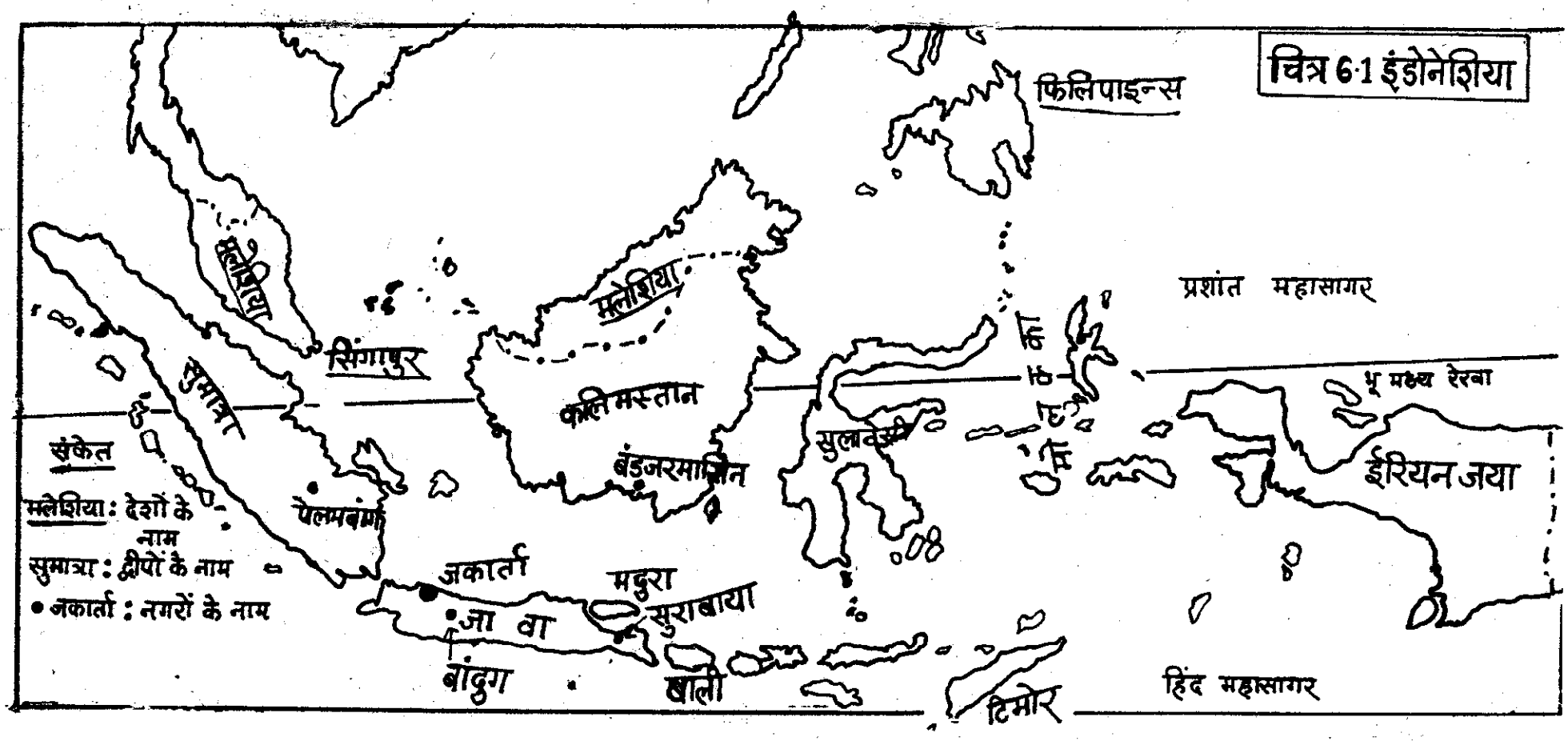

इंडोनेशिया के द्वीपों पर अनेक पहाड़ हैं। इनमें से कुछ बहुत ऊँचे हैं । यहाँ कई ज्वालामुखी पहाड़ हैं। उनके ऊपर ज्वालामुख (याने आग का मुँह) होता है, जहाँ से अक्सर पिघली चट्टान (जिसे लावा कहते हैं) फूटकर चारों ओर बहने लगता है । दूर से ऐसा लगता है मानों आग की धारें बह रही हों । ज्वालामुखी से राख, चट्टानों के टुकड़े, गैसें, धुआं आदि भी निकलते हैं । लावा ठंडा होकर कठोर चट्टानें बन जाता है । (चित्र 6-2)

(चित्र-6·2) ज्वालामुखी

जब ज्वालामुखी फूटते हैं तो आसपास के पेड़ पौधे, बस्तियाँ नष्ट कर देते हैं । लेकिन इंडोनेशिया में इनसे निकली राख से चारों ओर की मिट्टी बहुत उपजाऊ हो गई है । उस पर खेती की जाती है ।

कुछ वर्ष पहले मध्य जावा में एक किसान खेत जोत रहा था तो उसे पत्थर की कुछ मूर्तियाँ आदि मिलीं । उसने अधिकारियों को बताया और फिर वहाँ खुदाई करने पर कई मंदिर मिले, जो पहले कभी ज्वालामुखी की राख के नीचे दब गए थे ।

जावा का चित्र ध्यान से देखो (6·3) क्या तुम इसके पहाड़ों में से ज्वालामुखी पहचान सकते हो ? द्वीप के मैदानों को भी पहचानो । इंडोनेशिया के अन्य द्वीप भी कुछ इसी प्रकार की बनावट के हैं ।

उनमें जावा से भी ज्यादा पहाड़ी हिस्से हैं । उनका बहुत सा हिस्सा घने वनों से ढका है ।

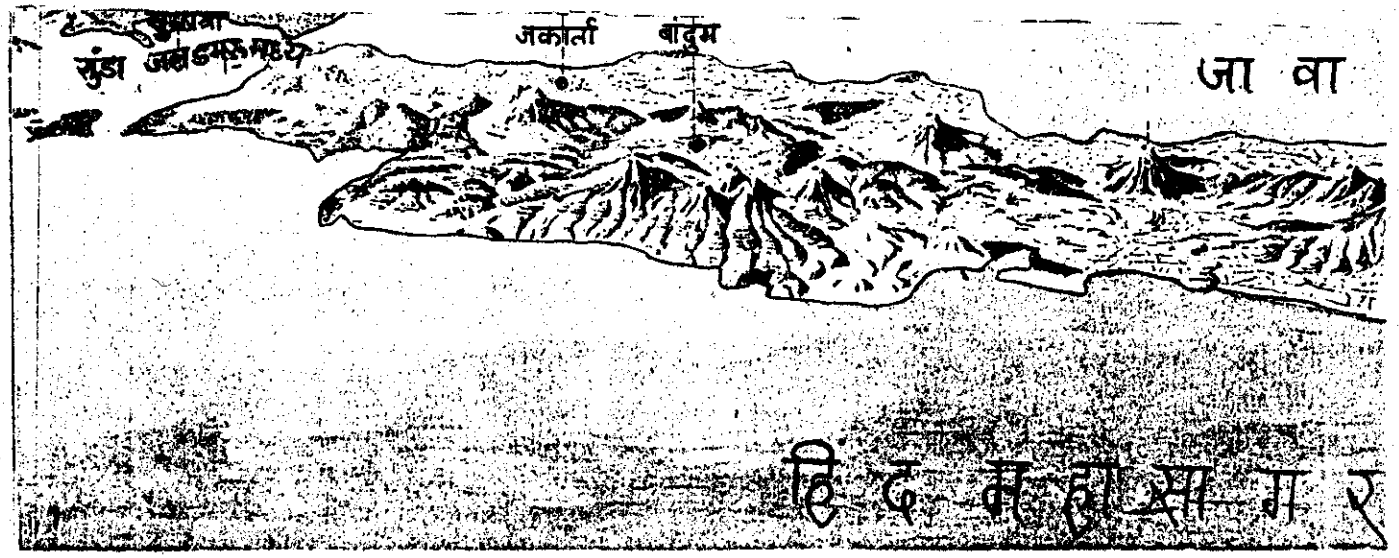

इंडोनेशिया की जलवायु तथा वनस्पति

तुम्हें याद होगा कि इंडोनेशिया के बीच से होकर विषुवत रेखा जाती है । देखो वह किन द्वीपों से होकर गुजरती है ?

इससे तुम अन्दाज लगा सकते हो कि यहां की जलवायु उन देशों से भिन्न होगी जो विषुवत रेखा से दूर हैं ।

अपने प्रदेश की तरह इंडोनेशिया में जाड़ा गर्मी तथा वर्षा की ऋतुएं नहीं होंती, क्योंकि यहां सूर्य साल भर सिर के ऊपर चमकता है । इसलिए हमेशा गर्मी पड़ती रहती है । हां, ऊंचे पहाड़ों पर अवश्य ठंड रहती है ।

सूर्य की तेज किरणों से चारों ओर के समुद्र का पानी भाप बनकर बादलों के रूप में छाता रहता है । इनसे इंडोनेशिया में साल भर वर्षा होती रहती है ।

इसी कारण यहां सालभर खेती होती रहती है । अपने यहां गर्मियों में खेत खाली रहते हैं, लेकिन इंडोनेशिया में साधारणत: ऐसा नहीं होता ।

हम जानते हैं कि पेड़ पौधों के लिए तीन प्रमुख चीजों की आवश्यकता होती है, धूप, पानी और मिट्टी । इंडोनेशिया में पेड़ों के लिए पर्याप्त धूप पड़ती है, साल भर

6•4 इंडोनेशिया के घने वन - चित्र

पानी बरसता है, तो पेड़ पौधे मौज से पलते-बढ़ते हैं । यहां हजारों तरह के पौधे तथा पेड़ होते हैं ।

यहां के जंगल इतने घने होते हैं कि दिन में भी अँधेरा रहता है । चारों ओर बड़े पेड़, छोटे पेड़, घास, पेड़ों में लिपटी बेलें देखने को मिलती हैं । पेड़ एक दूसरे से सूरज की रोशनी के लिए लड़ते रहते हैं और लम्बे होते जाते हैं । पानी इतना बरसता है, और घने जंगल के कारण सूख नहीं पाता; तो कहीं-कहीं दलदल बन जाते हैं । यही कारण है कि वनों को काटकर साफ करना और रास्ता बनाना तक कठिन हो जाता है । (चित्र 6·4)

इन जंगलों में अनेक जंगली जानवर जैसे हाथी, शेर, रीछ, हिरण, लोमड़ी एवं बड़े बन्दर आदि बहुत हैं । तरह-तरह की रंग बिरंगी चिड़ियां भी रहती हैं । (चित्र 6·5)

यहाँ के जंगलों में मूल्यवान लकड़ी जैसे - सागौन, महोगनी, आबनूस आदि के पेड़ बहुत होते हैं । यहां बांस व बेंत के पेड़ भी मिलते हैं । जिनकी लकड़ी से मकान, जहाज, आदि बनाए जाते हैं ।

यहां से लकड़ी विदेशों को भी भेजीजाती है । बन्दरगाहों पर लकड़ी से लदे जलयान दिखाई देते हैं । जंगलों की कटाई अब यहां एक समस्या है, क्योंकि जंगल खत्म होते जा रहे हैं । इससे वर्षा के साथ मिट्टी तेजी से कटकर बह भी जाती है ।

बताओ, तुम्हारे आसपास सागौन, बेंत और बांस जैसे पेड़ पाये जाते हैं ? यदि पाये जाते हैं तो उनका क्या उपयोग होता है ?

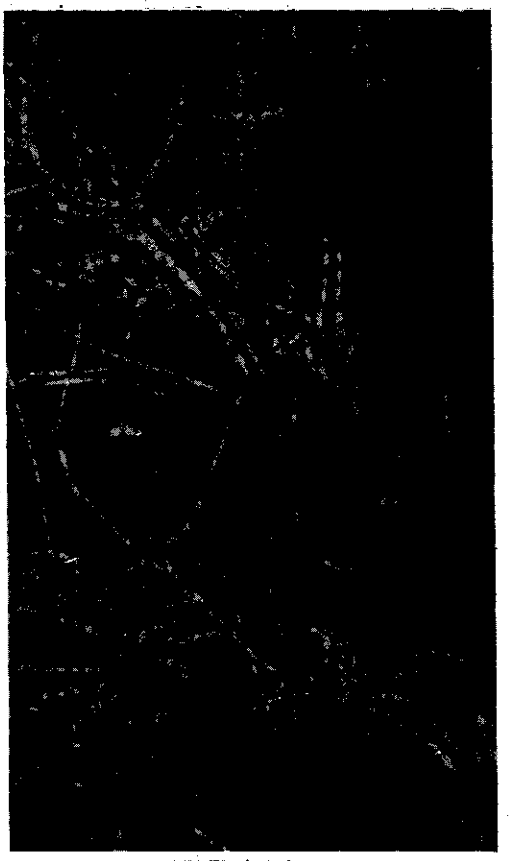

चित्र -6·5

इंडोनेशिया में खेती : तुम शायद सोचते होगे कि अगर यहां जंगल ही जंगल हैं तो लोग कहां रहते होंगे ? वे खेती कहां और कैसे करते होंगे ? इंडोनेशिया के बहुत से द्वीपों के अधिकतर भाग अब भी जंगलों से ढके हैं । केवल समुद्र के तट के मैदानों को साफ कर खेती होती है । लेकिन कुछ द्वीपों जैसे जावा, बाली, मदुरा, सुमात्रा आदि में बहुत सा हिस्सा साफ कर लिया गया है, जहां खूब खेती होती है । तुम जावा द्वीप के इन मैदानों का चित्र देखो। इंडोनेशिया की मुख्य उपज चावल है । बताओ यहां चावल अधिक क्यों होता है ? गेहूं क्यों नहीं होता ? अपने प्रदेश में चावल किस ऋतु में होता है ?

इंडोनेशिया में चावल के अलावा मक्का, सोयाबीन, सेगो, मूंगफली आदि भी होता है । नारियल और केला भी यहां खूब होता है ।

जावा द्वीप गन्ने की खेती के लिए प्रसिद्ध है।

चाय, कोको तथा कुनैन दवा बनाने के लिए सिंकोना की भी खेती यहां होती है। तुम्हें शायद मालूम हो कि कुनैन दवा मलेरिया नामक बुखार की दवा है। मानचित्र 6·6 देखो- इंडोनेशिया में कौन सी फसल कहां होती है।

यहां की जलवायु रबर के वृक्ष के लिए भी अच्छी है, इसलिए अब बगानों में रबर के पेड़ भी लगाए गए है। उसके तने से दूध जैसा पदार्थ निकलता है, जिससे रबर बनाया जाता है। तुम पेन्सिल से लिखकर रबर से मिटाते होगे। चित्र (6·7) में रबर के वृक्ष से दूध निकालने का ढंग देखो और वर्णन करो। बताओ हम लोग रबर की और कौन सी चीजें इस्तेमाल करते हैं ?

इंडोनेशिया में होने वाली इन फसलों को अधिक पानी की आवश्यकता होती है। तुम्हारे प्रदेश में क्या ये फसलें होती हैं ? भारत के उन राज्यों में जैसे केरल, बंगाल, तथा आसाम, जहां खूब वर्षा होती है, इनमें से कई फसलें होती हैं।

इंडोनेशिया इलायची, लौंग, जायफल, काली-मिर्च तथा चंदन आदि के पौधों के लिए सदियों से प्रसिद्ध है। ये मसाले दूसरे देशों को बेचे जाते हैं। इन गर्म मसालों का उपयोग भारत की सभी रसोईयों में होता रहा है, मगर दूर के देश जैसे- हालैन्ड, फ्रांस इटली, इंग्लैन्ड, स्पेन, पुर्तगाल आदि में भी ये उपयोग में आते हैं। तुम क्या बता सकते हो कि अपने देश में ये मसाले किन राज्यों में होते हैं ? तो क्या उन प्रदेशों में इंडोनेशिया से मिलती जुलती जलवायु होगी ?

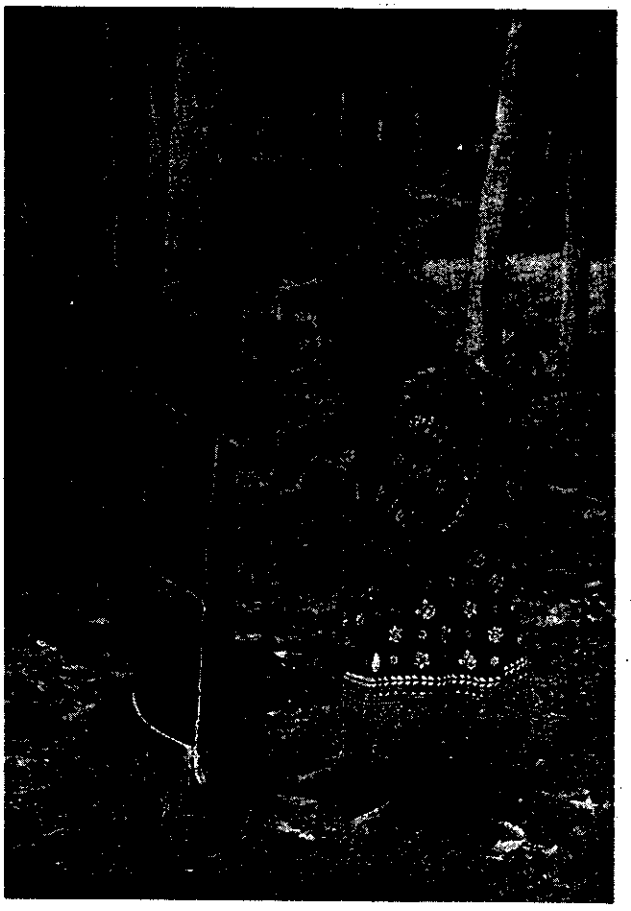

शुरू में तो घने वनों में इन मसालों के पौधे जंगली उगते थे। वहां के लोग ढूंढकर उन्हें इकट्ठा करते थे और शहर लाकर व्यापारियों को बेच देते थे। डच, अरब, व्यापारी इन मसालों को जहाजों में लादकर ले जाते और धन कमाते थे। उनके देश में ऐसे मसाले नहीं उगते। भारत के व्यापारी भी मसालों का व्यापार करने यहां आते थे। इनमें से बहुत से लोग इंडोनेशिया में ही बस गए। धीरे-धीरे जब इन मसालों की मांग बढ़ी तो किसानों ने सोचा कि क्यों न इनकी खेती की जाए। फिर धीरे-धीरे इनकी खेती होने लगी।

इंडोनेशिया दूसरे देशों को कॉफी, रबर, कालीमिर्च चाय, तम्बाकू, नारियल का तेल और खोपरा भी बेचता है।

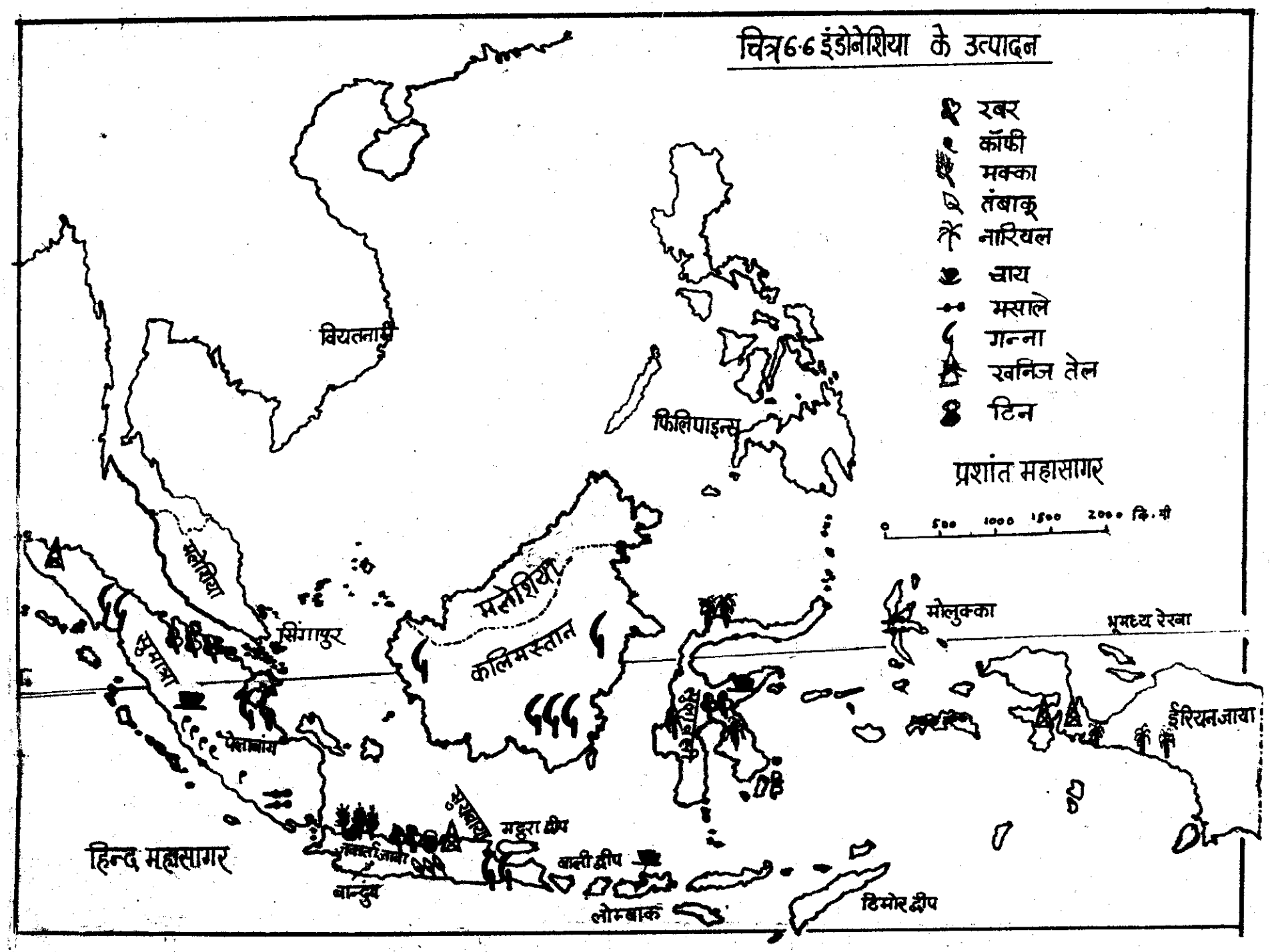

चित्र 6.6 इंडोनेशिया के उत्पादन

इंडोनेशिया में सिर्फ मैदानों में ही खेती नहीं होती । पहाड़ी ढलानों पर, जहां उपजाऊ मिट्टी है, लोग ढलान को काट-कर सीढ़ी की तरह छोटे-छोटे खेत बना लेते हैं । यदि ढलान को काटकर समतल न बनाएं तो क्या खेतों में मिट्टी होगी?

क्या ढलानों पर सिंचाई हो सकती है ? ऐसे सीढ़ीदार खेत न होने पर वर्षा का पानी रुकेगा या ढलान पर बह जायेगा ?

चित्र को देखो। पानी रोकने के लिए क्या प्रबन्ध किया गया है ? अन्य वृक्ष किस चीज के हैं ? क्या ऐसे पेड़ तुम्हारे खेतों के आस-पास भी होते हैं ?

चित्र में वहां की लड़कियों के कपड़े भी देखो । क्या अपने देश में आसाम प्रदेश के लोगों जैसे ही कपड़े वे पहनती हैं ? वहां की पोशाक का एक अन्य चित्र भी दिया गया है । (चित्र- 6·9) बताओ ये लोग अधिकतर सूती कपड़े पहनते होंगे या ऊनी?

इंडोनेशिया के जंगलों में कुछ आदिम - जातियां भी रहती हैं, जो एक जगह रहकर खेती नहीं करतीं । वे लोग जंगलों को साफ करके लकड़ी को जला देते हैं । दो चार साल वहां खेती करके फिर दूसरी जगह खेती करने चले जाते हैं ।

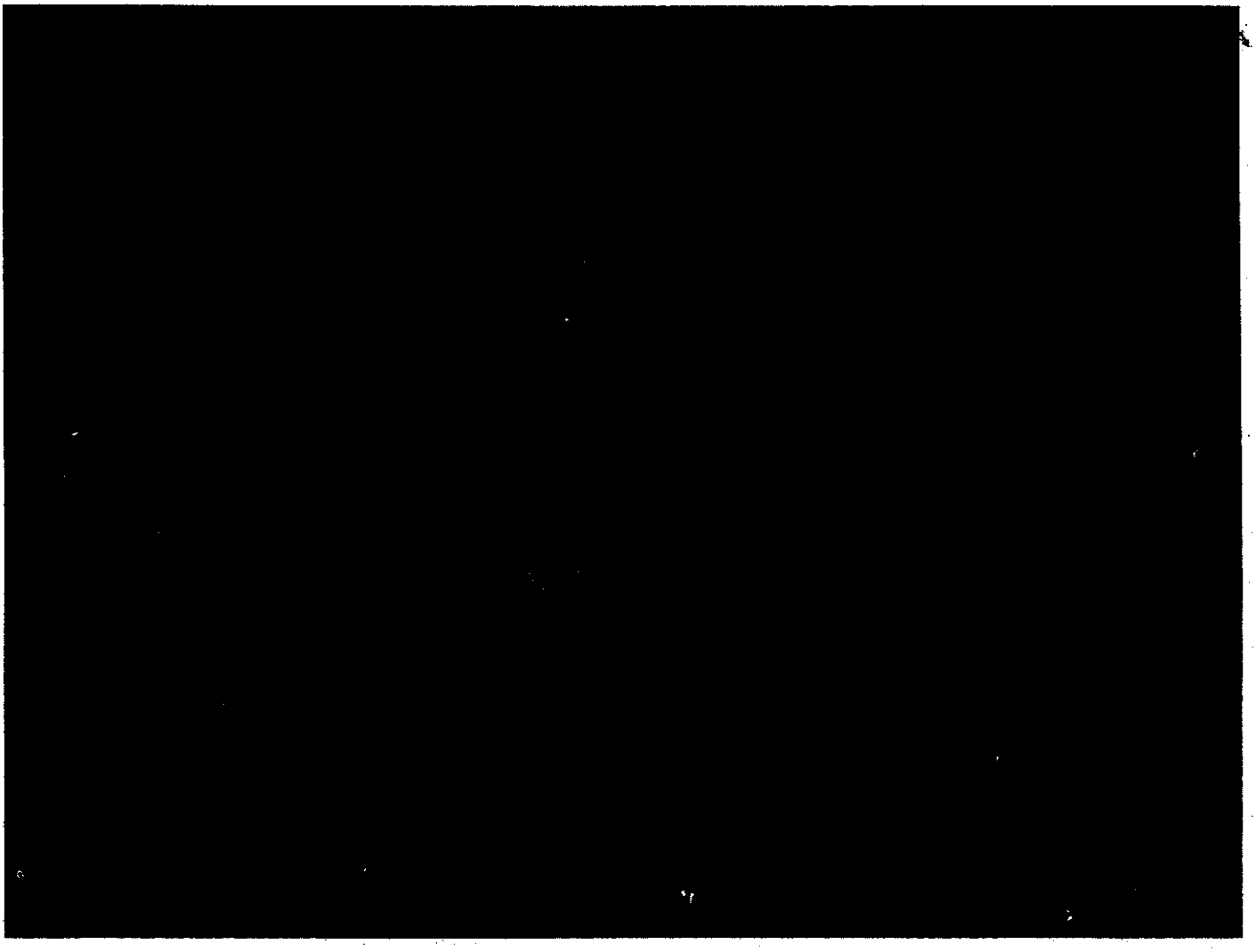

सीढ़ीनुमा खेत - चित्र 6·8

खनिज तथा उद्योग : इंडोनेशिया में अनेक खनिज निकाले जाते हैं, जैसे टिन, खनिज तेल, मैंगनीज, बॉक्साइट, कोयला, लोहा आदि। क्या तुम इनको पहचानते हो? अपने चारों ओर धातु की चीजें देखकर बताओ वे किस खनिज से बनाई जाती हैं? तुमने घर में अल्यूमिनियम के बर्तन देखे होंगे। उसके कच्चे खनिज को ही बॉक्साइट कहते हैं। इंडोनेशिया में बॉक्साइट की खदानें हैं। अपने देश में भी वह खूब निकाला जाता है।

तुमने यह भी देखा होगा कि पीतल के बर्तनों में सफेद सी धातु से कलई की जाती है जिसे हम रांगा कहते हैं। यही टिन धातु है।

तुम घरों में केरोसीन जलाते हो। पेट्रोल से स्कूटर, मोटरें आदि चलती हैं। यह खनिज तेल को साफ करने पर मिलते हैं। इंडोनेशिया में भी अपने देश के आसाम और गुजरात राज्यों के समान कुछ द्वीपों पर खनिज तेल निकाला जाता है।

मानचित्र 6·6 में देखो टिन और खनिज तेल किन द्वीपों पर निकाला जाता है? पहले खनिज तेल निकाल कर बाहर भेज दिया जाता था, अब उसका देश में भी उपयोग होने लगा है।

इंडोनेशिया में पाए जाने वाले खनिजों का अधिकतर व्यापार होता है।

सन् 1945 में इंडोनेशिया एक स्वतंत्र देश हो गया। तब यहां विकास शुरू हुआ। यहां मिलने वाले खनिजों और खेती से मिलने वाली चीजों के कारण अब यहां कई उद्योग लगाए जा रहे हैं।

नीचे इंडोनेशिया में होने वाली कुछ चीजों के नाम दिए गए हैं। उनके आगे उनसे संबंधित उद्योगों के नाम नीचे दी गई सूची में से छांटकर लिखो।

उत्पादन	उद्योग
1· रबर	
2· गन्ना	
3· लकडी-बांस	
4· खनिज तेल	
5· कच्चा लोहा तथा कोयला	

इंडोनेशिया के कुछ उद्योग : तेल को शुद्ध करने के कारखाने, मोटर गाड़ी, मशीनें, शक्कर, कागज, जहाज, टायर।

यहां अब बाहर से सूत मंगाकर कपड़ा बनाने और वस्त्र सिलने का उद्योग भी विकसित हुआ है।

नाव तथा जहाज बनाने के उद्योग विकसित होने से समुद्री परिवहन में सुविधा हुई है। सड़कें और रेल मार्ग भी बनाए जा रहे हैं।

चित्र 6·9

इंडोनेशिया के निवासी : इंडोनेशिया के कुछ द्वीपों, जैसे जावा, मदुरा तथा बाली आदि पर ही बहुत घनी जनसंख्या है ।

यहां घनी आबादी क्यों बसी है, सही गलत का निशान लगाकर बताओ -

1. इन द्वीपों पर पहाड नहीं हैं ।

2. यहां जंगल साफ कर के खूब खेती की गई है ।

3. यहां ज्वालामुखी नहीं हैं ।

4. यहां वर्षा कम होती है ।

5. यहां मिट्टी उपजाऊ है ।

इंडोनेशिया में पॉलिनेशियन, जावाई, मलय और चीनी लोग रहते हैं । अधिकतर लोग इस्लाम धर्म को मानते हैं । कुछ लोग हिन्दू और बौद्ध भी हैं । बताओ ये धर्म किन लोगों के साथ यहां आए होंगे ? इन बातों के बारे में तुम्हें इतिहास पढ़कर पता चल सकता है । सोलहवीं शताब्दी में यूरोप के लोगों ने इंडोनेशिया आने का समुद्री मार्ग खोज लिया था । मानचित्र देखकर बताओ ये किन समुद्रों या महा - सागरों से होते हुए आए होंगे । पुर्तगाली लोगों ने पहले इंडोनेशिया के बंदरगाहों पर कब्जा किया था । बाद में हालैन्ड के डच लोगों ने यहां राज्य बना लिया और कई सालों तक इंडोनेशिया पर राज्य किया ।

इंडोनेशिया की अधिक आबादी अब भी गाँवों में रहती है ।

वहां का एक चित्र देखो (6.10) और बताओ -

1. मकानों की छतें इतनी ढलवा क्यों हैं ?

2. मकान किस चीज के बने लगते हैं ?

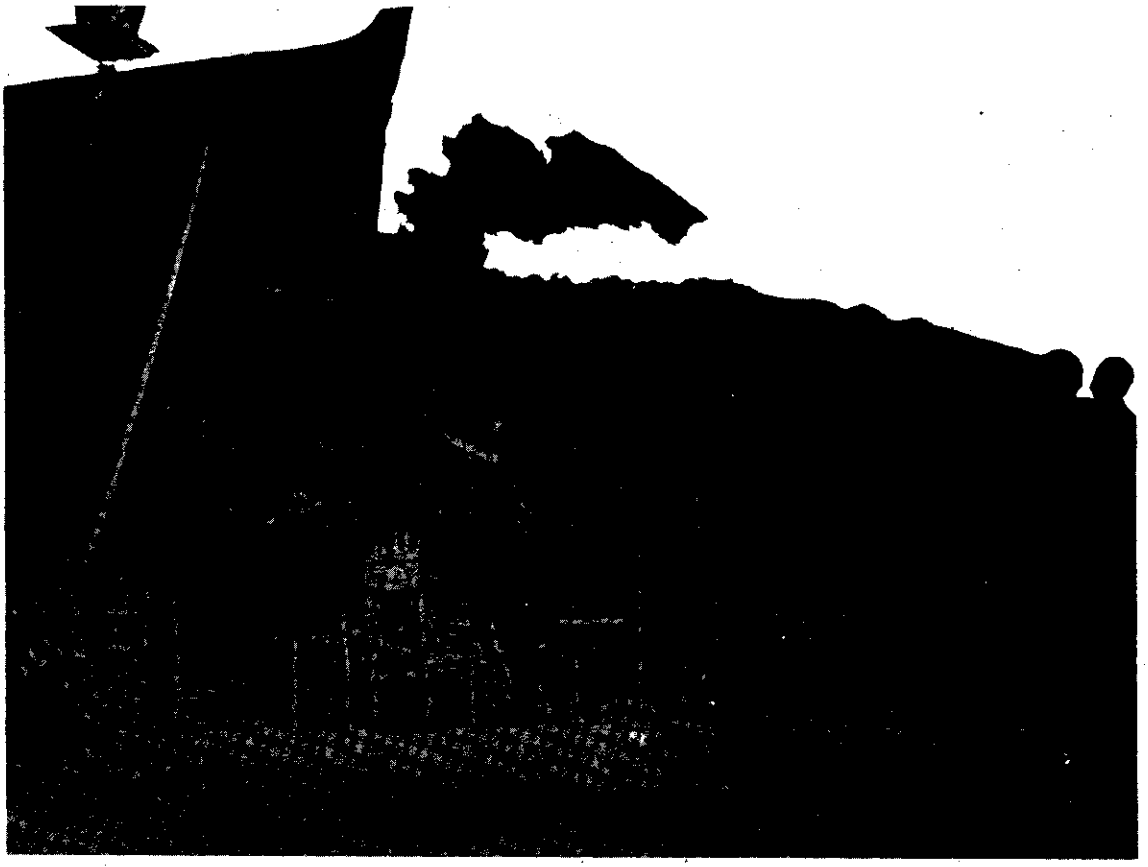

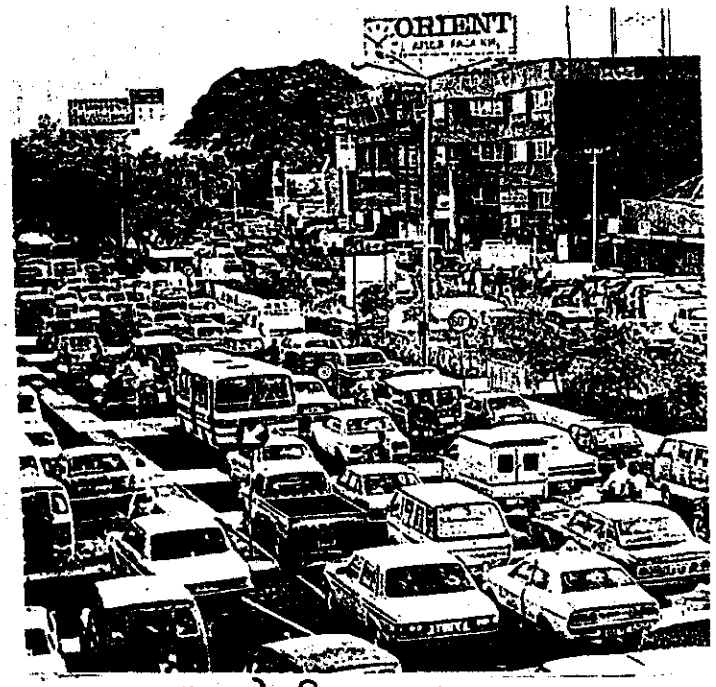

इंडोनेशिया में कुछ 'बड़े नगर भी हैं । यहां की राजधानी जकार्ता जावा द्वीप पर है । अन्य बड़े नगर बान्दुंग, पेलोबांग, सुराबाया आदि हैं । मानचित्र देखकर बताओ वे किन द्वीपों पर हैं ? जकार्ता नगर का चित्र देखो । (6·1) क्या यहां के मकान अपने नगरों के मकानों जैसे हैं ?

अभ्यास के लिए प्रश्न

1· भारत से किस दिशा में जाने पर इंडोनेशिया देश मिलेगा ?

2· इंडोनेशिया में साल भर गर्मी क्यों पड़ती है ? नीचे दिए कारणों में से एक चुनो –

अ – साल भर सूर्य की सीधी किरण होने के कारण
ब – मैदान होने के कारण
स – वनों से ढका होने के कारण

3· इंडोनेशिया में जाड़े की ऋतु होती है/ नहीं होती है ।
4· इंडोनेशिया में घने वन होने के दो कारण बताओ ।
5· इंडोनेशिया से बाहर भेजी जाने वाली पांच फसलों के नाम बताओ ?
6· मानचित्र देखकर सूची बनाओ कि इंडोनेशिया के इन द्वीपों में कौन सी फसलें होती हैं –

1· जावा 2· सुमात्रा
3· कलिमन्तान 4· सुलावेसी
5· मोलुक्का

7· यूरोप के लोग इंडोनेशिया में किन वस्तुओं का व्यापार करने आए थे ?
8· स्वतंत्रता के बाद इंडोनेशिया में कौन से उद्योग बढ़े हैं ?
इससे यहां के लोगों को क्या लाभ हुआ ?
9· नावों और जलयानों की इंडोनेशिया को बहुत आवश्यकता है, सोचकर बताओ ऐसा क्यों है ?

****

इतिहास

पाठ-5 पशुपालक लोग

आज हम कई तरह के पशु पालते हैं। शायद तुम्हारे घर पर भी कोई पालतू पशु होगा। अपने पालतू पशुओं की हम देख-रेख करते हैं। हमें उनसे बहुत लगाव भी हो जाता है। पालतू पशुओं से हमें कई तरह की सहायता मिलती है।

पर क्या मनुष्य हमेशा से पशु पालता था? "शिकारी मानव" का पाठ पढ़कर तुम जानते होगे कि ऐसा नहीं था। फिर मनुष्य ने पशुओं को पालतू कब बनाया? यह कहानी कोई नहीं जानता। जैसे भी हो, जब लोग पशु पालने लगे तो उनके जीवन में कई बदलाव भी आए होंगे। पालतू पशुओं की देख-रेख के लिए मनुष्य को कई नए काम करने पड़े होंगे। पालतू पशुओं से उसे कई तरह के लाभ भी मिलने लगे होंगे जो शिकार के दिनों में नहीं मिलते थे।

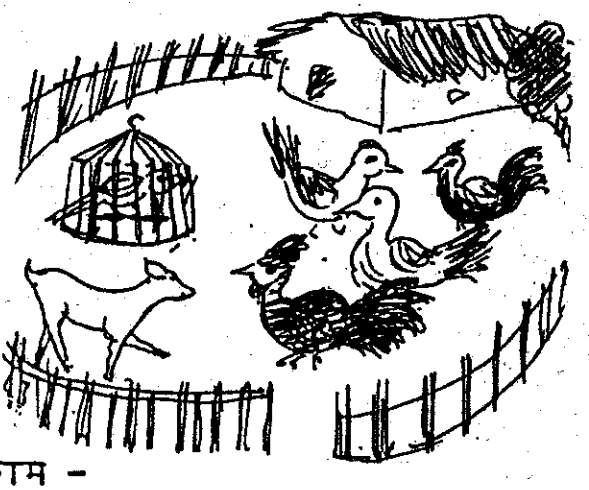

काम –

जानवर के चारे का इंतजाम, जानवर को मारने के लिए घेरना, जानवर के पीने के पानी का इंतजाम, मरे जानवर को कंधे पर ढोकर लाना, बीमार जानवर का इलाज कराना, जानवर को नहलाना, जानवर की खाल उतारना, जानवर के रहने की जगह बनाना, थके जानवर को सुस्ताने देना, थके जानवर पर वार करना, जानवरों की दूसरे जानवरों से रक्षा करना, जानवरों को चोरी-उकैती से बचाना, मरे जानवर के सींग निकालना, जानवर का मांस काटना, दूध दुहना, जानवर के बच्चों के जन्म में मदद करना।

नीचे कई सारे काम बताए गए हैं। बहुत से ये काम तुम आसपास होते देखते होगे, या खुद करते भी होगे। <u>क्या तुम पहचान सकते हो कि इनमें से कौन से काम तब शुरू हुए होंगे जब मनुष्य पशुपालने लगा? उन पर ✓ का निशान लगाओ और अलग छांटकर लिख लो।</u>

पशु पालना शुरू करने के बाद मनुष्य को कई तरह के लाभ मिलने लगे । पालतू पशुओं से हमें किस तरह के लाभ मिलते हैं यह तो तुम जानते ही हो । अपनी कॉपी में कोई 15 पालतू पशु व पक्षियों के नाम लिखो और बताओ कि उनसे हमें क्या लाभ मिलते हैं ।

जब पशु पालतू नहीं बनाए गए थे तब नीचे दिए लाभों में से कौन से लाभ मनुष्य को नहीं मिलते थे , (× का निशान लगाकर) बताओ -

दूध, मांस, घी, चरबी, दही, खाल, ऊन, हड्डी की चीजें, सींग की चीजें, गाड़ी खींचने की सहायता, सामान ढोने की सहायता, हल खींचने की सहायता ।

पशुओं से हमें तरह-तरह की चीजें मिलती हैं । पर, यही नहीं। कई पशुओं की ताकत भी हमारे काम आती है । जैसे- बैल, भैंस, ऊंट, घोड़ा, खच्चर आदि । क्या तुम्हें लगता है कि इन पशुओं में मनुष्य से ज्यादा ताकत होती है ?

माल ढोने के काम कौन-कौन से पशु आते हैं ?

गाड़ी, तांगा आदि खींचने के काम कौन से पशु आते हैं ?

सवारी के काम कौन से पशु आते हैं ?

इन पशुओं की सहायता के बिना मनुष्य को एक जगह से दूसरी जगह जाने में, एक जगह से दूसरी जगह माल लाने-ले जाने में बहुत कठिनाई होती थी । पशुओं की सहायता से यात्रा करना सरल हो गया ।

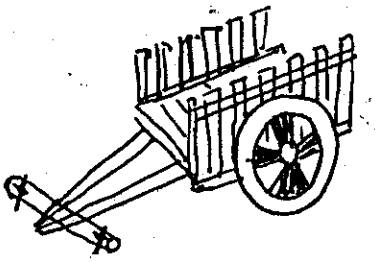

किसान खेती करते हैं - पर, उनके यहां पशु भी पाले जाते हैं । बताओ किसानों के यहां किस तरह के पशु पाले जाते हैं ?

वे किसानों के क्या काम आते हैं ?

ग्वाले भी पशुपालते हैं । ग्वालों के पास कई गाय व भैंस होती हैं, जिनका दूध बेचा जाता है ।

दूध बेच कर ग्वालों को जो आमदानी होती है उस पैसे से ग्वाले अपनी जरूरत की चीजें (अनाज, दाल, तेल, साबुन, कपड़ा, बर्तन आदि) खरीद लेते हैं ।

तुमने गाडरवारों के बारे में भी सुना होगा। ये वे लोग हैं जो जगह-जगह भेड़ चराते फिरते हैं । ये लोग जब भेड़ों के झुण्ड को लेकर चारे की तलाश में निकलते हैं तो अपना रहने, खाने का सामान ऊंट पर लाद कर चलते हैं । जहां ठीक लगे, डेरा डाल दिया । वहां का चारा खत्म हो जाए तो आगे बढ़ दिए ।

भेड़ों का ऊन बेचकर ये पैसे कमाते हैं । पैसे से ये दूसरी चीजें खरीद लेते हैं ।

पर क्या तुम ऐसे लोगों के बारे में जानतेहो जिनका जीवन लगभग पूरी तरह पशुओं के सहारे चलता हो ?

तुम भूगोल के पाठों में देखोगे कि कैसे ईरान में भेड़, बकरी पालने वाले रहते हैं, और कैसे टुंड्रा प्रदेश में रेन्डीयर पालने वाले। उनके भोजन और रहन-सहन की अधिकतर चीजें पालतू पशु के दूध, मांस, खाल, हड्डी, उन, सींग से आती हैं । जरूरत की कुछ ही चीजें वे थोड़ी बहुत, दूसरे लोगों से लेते हैं।

ऐसे लोगों का जीवन हमसे कितना फर्क होगा, जो सिर्फ पशुपालन के सहारे जीते हैं । हममें से कोई खेती करता है, कोई कारखाने में काम करता है, कोई गाय या मुर्गी पालता है, कोई स्कूल में पढ़ाता है । पर अगर सारे के सारे लोग सिर्फ पशु पालन करें, तो जीवन कितना भिन्न होगा। ऐसे एक लोगों के बारे में अब हम पढ़ेंगे । देखेंगे कि उनका जीवन हमारे जीवन से कितना अलग था ।

पशुपालक आर्य

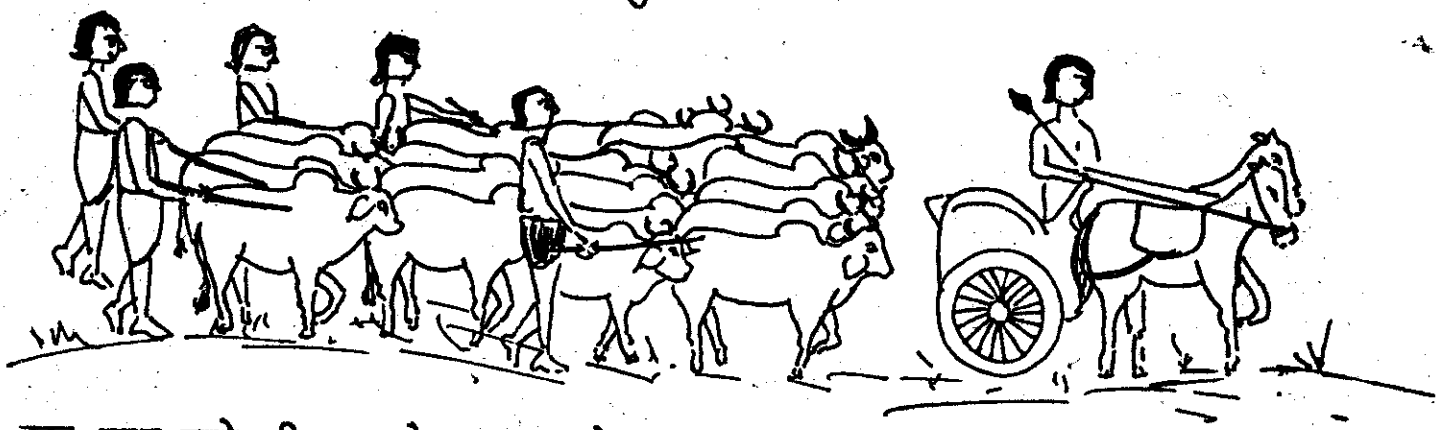

बहुत समय पहले की बात है । आज से तीन हजार पांच सौ साल पहले की । जब आर्य नाम के लोग होते थे । वे गाय बछड़े पालते थे । उनके पास लकड़ी के रथ भी होते थे, जो घोड़ों से खींचे जाते थे ।

तीन हजार पांच सौ साल पहले आर्य लोग अपनी गायें चराते-चराते सिन्धु नदी के किनारे आए । ऐसा माना जाता है कि वे काले सागर और केस्पियन सागर के पास जो मैदान हैं, वहीं से आये । इस जगह को तुम एशिया के नक्शे में देखो । सिन्धु नदी के किनारे आने के लिए वे किस दिशा में बढ़े ?

आर्य लोग कई झुन्डों में आए । अपने झुंड को वे "जन" कहते थे । उनके हर जन में कई परिवार होते थे । जन के प्रमुख परिवारों को "राजन्य" कहा जाता था । राजन्य परिवारों को जन के सब लोग बहुत मानते थे ।

एक जन के सारे परिवार एक दूसरे के संबंधी होते थे ।

क्या आजकल किसी गांव या शहर के सब परिवार एक-दूसरे के संबंधी हैं ?

आर्यों के कई सारे जन थे। किसी का नाम पुरुजन था, किसी का कुरुजन। इसी तरह भरतजन, अनुजन, यदुजन भी थे।

गायों के लिए चारा ढूंढते-ढूंढते ये जन एक नदी से दूसरी नदी के किनारे चले जाते।

नक्शा देखकर बताओ कि इस तरह आर्य जन किन नदियों के किनारे रहने लगे थे? उन दिनों भारत में और कौन-कौन लोग रहते थे? जिस इलाके में आर्य रहते थे वहाँ शिकारी लोग मिलते थे या खेती करने वाले?

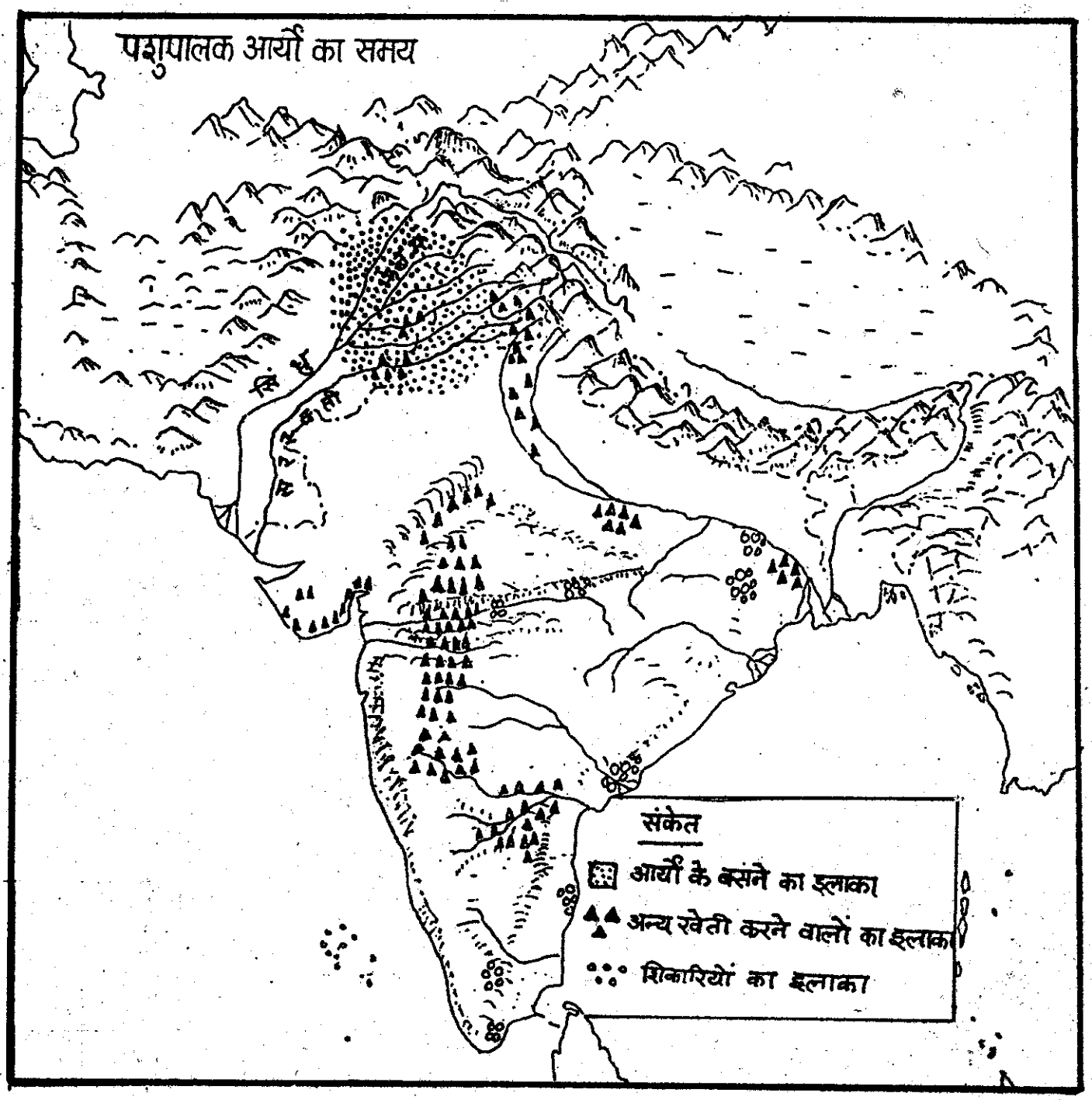

आर्यों के बारे में हमें आज पता कैसे चलता है ? आर्य लोग अपने देवताओं के लिए गीत बनाया करते थे। गीत यज्ञ के समय गाए जाते थे। यज्ञ करने के लिए आग जलाई जाती थी। उसमें दूध, घी की आहुति चढ़ाई जाती थी। आर्यों का यह मानना था कि वे अग्नि में जो कुछ भेंट चढ़ायेंगे वो भेंट अग्नि के द्वारा उनके देवताओं तक पहुंच जाएगी। देवता उनसे खुश होकर उनकी कामना पूरी करेंगे। जन के सब परिवार यज्ञ करने इकट्ठा होते थे।

जन के जो लोग यज्ञ करवाते थे और गीत बनाते थे, उन्हें ब्राहमण कहते थे। इन गीतों को रिगवेद कहा जाता है। इन गीतों की भाषा संस्कृत थी।

आर्य लोगों ने अपने गीत लिखे नहीं थे, शायद वे लिखना पढ़ना जानते नहीं थे। उनके बनाए हुए गीत व प्रार्थनाएं बाद में लिखी गईं। अब हम भी इन्हें पढ़ सकते हैं। और आर्यों के बारे में जान सकते हैं। रिगवेद की कुछ पंक्तियां नीचे दी गई हैं। आर्य लोग अपने देवता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं-

"हे इन्द्र हमें अपार धन दौलत दो,
सैकड़ों गाएं और घोड़े देकर हमारी
यह कामना पूरी करो।""

"गायों के मालिक, हे इन्द्र
गोशालाओं के दरवाजे खोल फेंको
हम गाएं जीत लाएंगे।
हमें विजय के लिए अपार शक्ति दो,
लड़ाई में हमारा साथ दो,
हमारे शत्रुओं का संहार करो।"

यह पढ़कर तुम्हें क्या लगता है -

आर्यों की धन दौलत क्या थी ?
वे अपने देवता इन्द्र को क्या कह कर बुलाते थे ?

सोचो, इस गीत को गाने वाले किसकी गायों को जीत लाने की बात कर रहे होंगे? उनके शत्रु कौन कौन लोग होंगे ?

इस तरह की कुछ और पंक्तियां हैं --

"हे अश्विन, लड़ाई में हमारी सहायता
के लिए आओ,
अपने रथ में घोड़े जोतो,
और हमारे साथ आओ,
तुम्हारे रथ, जो तेज दौड़ते हैं,
इतनी तेज कि आंख झपक नहीं पाती
और रथ यहां से वहां हो जाते हैं,
उन रथों के साथ हमारी रक्षा करने
आओ"

क्या इन पंक्तियों को पढ़कर हम बता सकते हैं कि आर्य लोग युद्ध कैसे लड़ते थे ?

रिगवेद में ऐसी और बहुत सी प्रार्थनायें हैं। उनसे पता चलता है कि आर्यजनों के लिए गाय सबसे महत्वपूर्ण चीज थी। उसी

के लिए वे प्रार्थना करते थे और गायों के लिए ही आर्यों के जन एक दूसरे से लड़ाई करते थे । उनका भोजन व रहन-सहन गाय के सहारे ही चलता था ।

आर्य लोग खेती बहुत ही कम करते थे । बस थोड़ी सी जौ उगा लिया करते । जौ की फसल दो या ढाई महीने में पककर तैयार भी हो जाती है और उसे आसानी से उगाया जा सकता है ।

चूंकि वे सिर्फ गायों के सहारे जीते थे, उनके पास सैकड़ों गाएं थी । सैकड़ों गाय हों तो एक जगह का चारा कुछ दिनों में खत्म हो जाता होगा । फिर चारे की तलाश में दूसरी जगह जाना पड़ता होगा । इस लिए शायद आर्य लोग बहुत ज्यादा समय तक एक जगह पर नहीं रहते थे ।

गायों के सहारे जीने वाले आर्यों का जीवन कैसा होगा- यह सवाल हमारे मन में उठता है । वे क्या खाते थे, क्या पहनते थे । कैसे घरों में रहते थे, और उनके घरों में क्या-क्या सामान होता था -यह बातें हम जानना चाहेंगे ।

पर, जानें कैसे ? इस समय आर्यों द्वारा रचे गए रिगवेद को पढ़कर ऐसी बहुत सी बातें ठीक से पता नहीं चल पातीं ।

अगर गाय से उनका भोजन आता था तो भोजन में क्या-क्या होगा यह तो तुम बता ही सकते हो । यहां लिख दो -

अब अगर हम सोचें कि वे अपना भोजन किस में बनाते होंगे ? क्या उनके पास बर्तन थे ? वेदों को पढ़कर लगता है कि आर्य लोग बर्तनों का उपयोग करते थे । पर उनके बर्तनों के बारे में हमें बहुत कम मालूम है ।

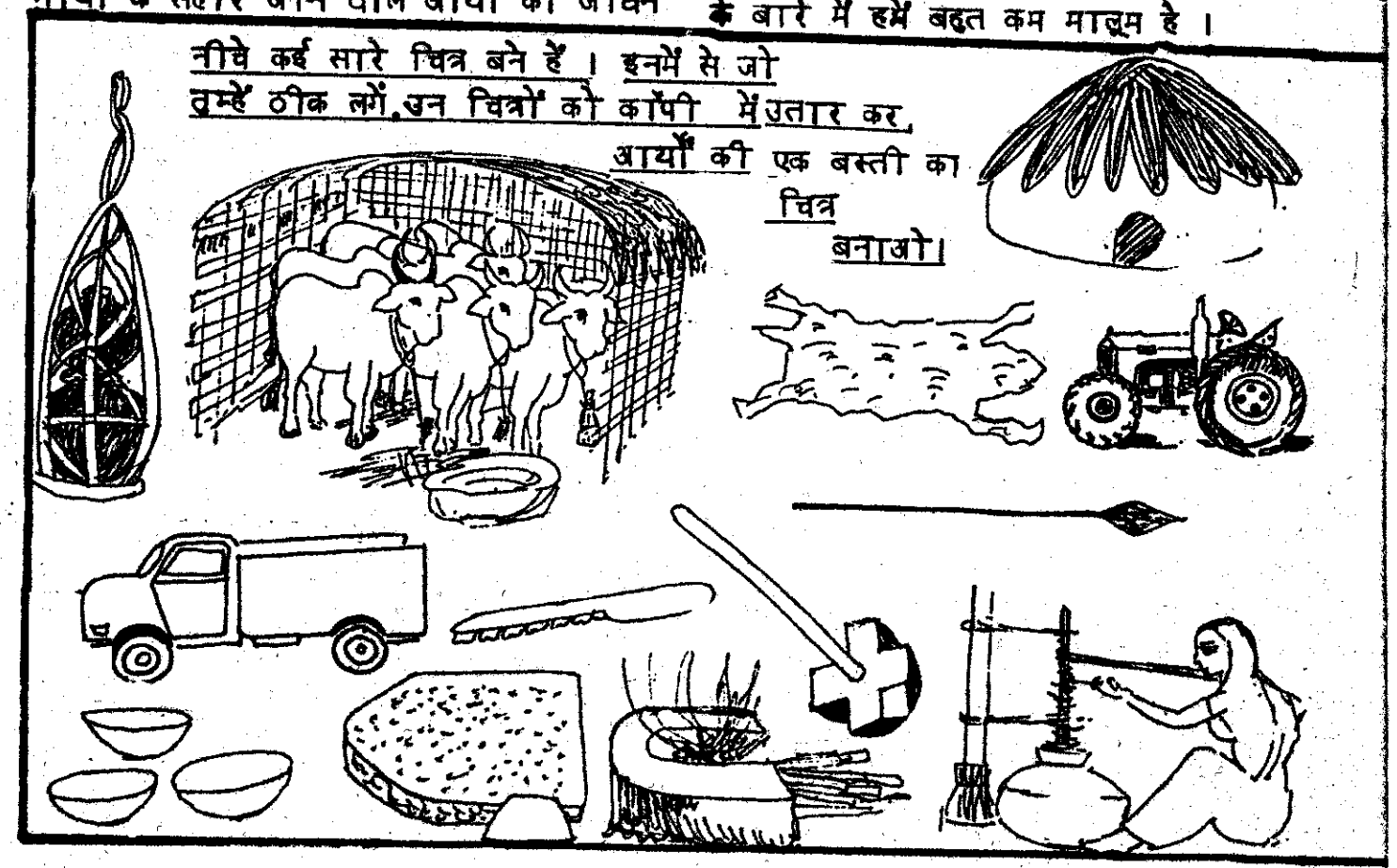

नीचे कई सारे चित्र बने हैं । इनमें से जो तुम्हें ठीक लगें, उन चित्रों को कॉपी में उतार कर, आर्यों की एक बस्ती का चित्र बनाओ।

क्या तुम सोच सकते हो कि आर्यों को किस किस काम के लिए कैसे बर्तनों की जरूरत होती होगी ?

आर्य लोग बुने हुए कपड़े पहनते थे। उन दिनों न बाजार व दुकानें थीं, न ही कारखाने। औरतें घर पर कपड़े बुना करती थीं। पर कपड़े किस चीज के थे - ऊन के या कपास के - यह हमें साफ-साफ पता नहीं चलता और यह भी नहीं पता चलता कि ऊन या कपास आर्यों को कहां से मिलती होगी।

यह तुम जानते ही हो कि आर्यों के पास रथ हुआ करते थे। उनकी बस्ती में एक बढ़ई होता था जिसे वे रथकार कहते थे। यानि, रथ बनाने वाला। रथकार जन का बहुत महत्वपूर्ण आदमी होता था।

आर्यों के घर कैसे बनते थे, यह भी हमें नहीं मालूम। पर एक बात सोचने की है। अगर वे ज्यादा दिन तक एक जगह नहीं रहते थे तो उसी हिसाब से अपने घर बनाते होंगे। उनके घर शायद मिट्टी, लकड़ी व घास के बनते थे।

ये रही चीजों की बात। अब सोचो कि आर्य जन के लोग दिनभर क्या किया करते होंगे ?

हम कल्पना कर सकते हैं कि आर्य जन के परिवारों में औरतें गाय दुहने, दूध उबालने, घी, मक्खन, दही, छाछ बनाने के काम में लगी रहती होंगी और आदमी गाय चराने, गायों को नहलाने, खिलाने आदि का काम करते होंगे। गोशाला व घर की सफाई भी कोई करता होगा। घोड़ों की देखरेख भी करनी होती होगी।

ऐसा मालूम पड़ता है कि राजन्यों व ब्राह्मणों के यहां दासियां काम करती थीं

अक्सर उनके गाय बछड़े बीमार होकर मर जाते थे या कमजोर हो जाते थे। तो वे अपने देवी देवताओं से गायों के लिए प्रार्थना करते थे। तुमने देखा कैसे वे गाय और घोड़ों के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

जब किसी एक जन के पास गाय कम हो जातीं तो वह दूसरे जन पर धावा बोल कर, उसकी गायें भगा लाने की कोशिश करते। अगर दूसरे जन के लोग किसी अच्छे हरे-भरे मैदान में रह रहे हों तो उस मैदान पर अपने पशु चराने के लिए भी दो जनों में लड़ाई हो जाया करती थी। वे रथों पर सवार होकर, काँसे के भाले, तलवार व तीर कमान आदि से लड़ते थे।

हारे हुए लोगों को कई बार बन्दी बना कर भी लाया जाता। उनसे गाय पालने व घर का काम करवाया जाता। खासकर हारे हुए जन की औरतों को दासी बना लिया जाता।

एक दूसरे पर धावा बोलकर गाय, सोना आदि लूटना आर्य जनों के जीने का तरीका बन गया।

पर युद्ध करने कौन जाता था? आर्यों के समय में जन के पास कोई अलग से सेना नहीं थी। जन के सब लोग अक्सर सभा किया करते थे। सभा में जन के प्रमुख लोग (राजन्य) व साधारण लोग भी भाग लेते थे। वे सभा में तय करते थे कि किस जन से युद्ध करना है और कैसे। फिर वे राजन्यों में से किसी एक को अपना नेता या राजा चुन लेते थे। राजा लड़ाई में उनका नेतृत्व करता था।
जन के राजा, राजन्य और साधारण लोग मिलकर दूसरे जन पर धावा बोलते थे।

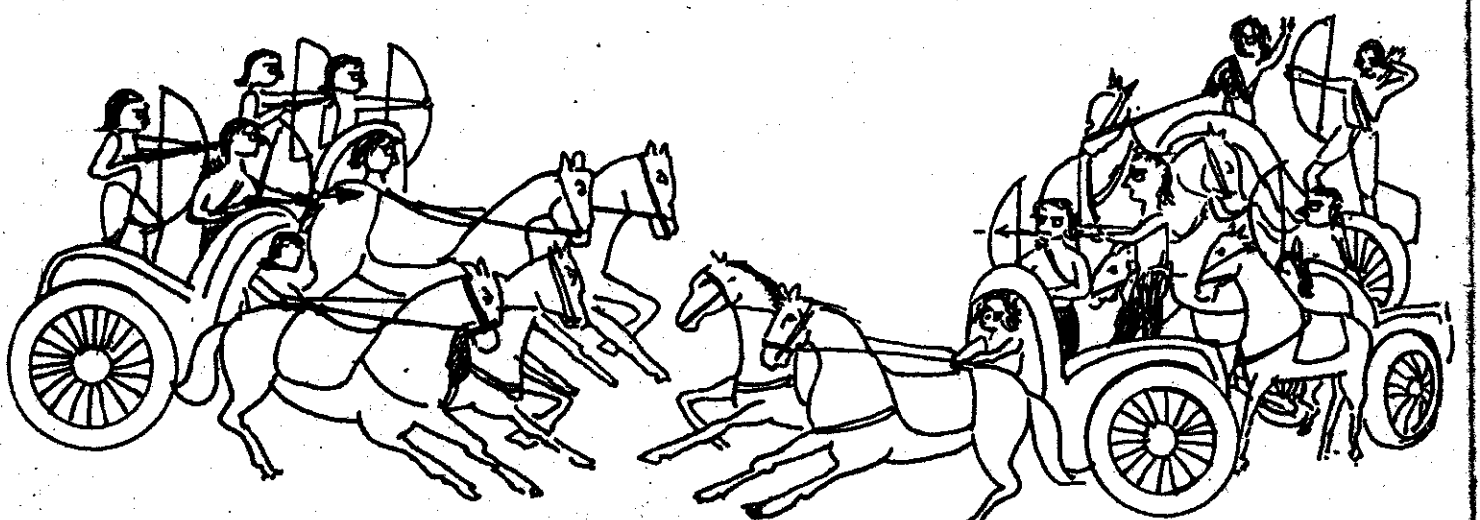

लड़ाई में जीत हो तो खूब सारी गायें, घोड़े, सोना, हथियार लूटकर लाया जाता था। इस समान का क्या होता था?

आर्य लोग युद्ध से लौटकर एक सभा करते थे। सभा में जन के सब लोग आते। सभा में राजा जीत में मिले गाय, घोड़े, सोना, दास-दासी व हथियारों को लोगों के बीच बाँटता था। इसमें से एक बड़ा हिस्सा वह अपने पास रखता था। एक बड़ा हिस्सा वह राजन्यों को देता था। गाय, सोना व दासियाँ, ब्राह्मणों को दान में दी जाती थीं।

लड़ाई में मिलीं मूल्यवान चीजें राजा, राजन्य व ब्राहमणों के बीच बंट जाती थीं ।

जीत के माल में से गाय आदि राजा जन के साधारण लोगों में भी बांटता था।

चर्चा के लिए

तुम्हें क्या लगता है --राजा जीत का सामान राजन्यों को क्यों देता था ?
ब्राहमणों को क्यों देता था ?
साधारण लोगों को क्यों देता था ?

जब कभी जन के साधारण लोग राजा की बहादुरी और चतुराई से खुश होते थे, वे उसके लिए कुछ भेंट लेते आते । इस भेंट को बलि कहा जाता था ।

बलि में क्या दिया जाता होगा ? यह भी हमें नहीं मालूम । राजा को कभी-कभी भेंट या बलि में जो चीजें मिलती थीं, उसमें से भी वह एक हिस्सा ब्राहमणों को दे देता था और कुछ हिस्सा राजन्यों को ।

आर्य जन केवल एक दूसरे के साथ नहीं लड़ते थे । रिगवेद में ऐसे लोगों के बारे में पता चलता है जिन्हें आर्य "दास, पणि" व "दस्यु" कहते थे ।

ये लोग आर्यों की भाषा संस्कृत नहीं बोलते थे । इनके देवी देवता भी अलग थे । वे खेती करते थे । बड़े छोटे गांवों में रहते थे ।

उन्होंने नदी नालों पर छोटे-छोटे बांध बनाए हुए थे ।

उन्होंने अपने गांव के चारों तरफ किले जैसी दीवार भी बनाई हुई थी ।

उनके पास न घोड़े थे न रथ ।

आर्य लोग घोड़े जहां से मंगवाते थे वहां तक उनकी पहुंच नहीं थी ।

आर्यों की इन लोगों से भी भिड़न्त होती थी ।

रिगवेद से कुछ पंक्तियां और पढ़ो -

"हे इन्द्र, तुम दस्युओं की शक्ति नष्ट करो,
उनके किलों को तोड़ डालो,
ताकि हम उन्हें हरा सकें,
उनके धन को आपस में बांट सकें ।"

दस्युओं के गांवों को लूटकर आर्यों को क्या-क्या चीजें मिली होंगी ? आर्यों और इन लोगों के बीच सिर्फ लड़ाई नहीं हुई । धीरे-धीरे समय के साथ, आर्य और ये लोग एक दूसरे के बारे में जानने लगे । एक दूसरे की बातें सीखने लगे । कभी-कभी दोनों के बीच शादी ब्याह व लेन-देन भी होता ।

नक्शे में तुमने उस समय के खेती करने वाले लोगों के इलाके देखे । खोदने पर उन लोगों के गांव की बची खुची चीजें मिलती हैं - घड़े, कांसे व ताम्बे की चीजें, सोने चांदी के गहने आदि । शायद ये उन्हीं लोगों के गांव थे जिन्हें आर्य "दस्यु" कहते थे ।

ऊपर दी गई बातें पढ़कर तुम्हें क्या लगता है -

क्या दस्युओं के पास ऐसी चीजें थीं जो आर्यों के पास नहीं थीं ?

आर्यों और दस्युओं ने एक दूसरे से क्या सीखा होगा ?

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. आर्य लोग एक जगह पर बहुत समय तक बसकर क्यों नहीं रहते थे ?
2. आर्य जन एक दूसरे से किन चीजों के लिए लड़ते थे ?
3. बलि कौन किसको देता था ? बलि कब दी जाती थी ?
4. आर्य किस तरह से पूजा-प्रार्थना करते थे ?
5. चूंकि आर्य पशुपालते थे, वे शिकारी मानव से कई बातों में अलग थे । यह तुम्हें पाठ पढ़ते-पढ़ते लगा होगा ।
   क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हें पशुपालने वाले आर्य शिकारी मानव से किन-किन बातों में अलग लगे व किन बातों में एक से लगे?
   तुम्हारी मदद के लिए हम यहां कुछ विषय बता रहे हैं ।

अ- खाना-पीना	ब- कपड़े
स- घर	द- लड़ाई
य- औजार	र- यात्रा

6. सही गलत बताओ-

   क- जब आर्य भारत आए तो उन्होंने कई गांव बसे पाए जहां लोग खेती करते थे ।
   ख- उस समय भारत में कोई शिकारी झुण्ड नहीं था ।
   ग- आर्यों ने जो किताब लिखी उसे रिगवेद कहते हैं ।
   घ- आर्य जन के लोग मिलकर युद्ध करने जाते थे ।
   ङ- राजा कबीले के लोगों से हर महीने बलि मांगता था ।
   च- राजा के कर्मचारियों को "राजन्य" कहा जाता था ।
   छ- लड़ाई में जीता गया सारा सामान राजा, राजन्यों और ब्राह्मणों के बीच बंट जाता था ।

पाठ 6 खेती करने वाले आर्य

पशु पालने वाले आर्य कहां रहते थे, कैसे रहते थे - यह तुमने देखा । धीरे-धीरे समय बीता···कुछ पांच सौ साल बीते । कई आर्यों के झुंड (जन) तो पहले की तरह सिंधु और सरस्वती नदी के किनारे रहते रहे । मगर उनके कुछ झुंड घूमते-घूमते आगे बढ़ते गए और एक नए इलाके में जाकर रहने लगे ।

<u>नक्शा देखकर पता करो वे किस दिशा में आगे बढ़े । किन नदियों के किनारे रहने लगे ।</u>

आर्यों के आने से पहले इन नदियों के किनारे कई सारे लोग रहते थे । ये लोग खेती करते थे और गांव बनाकर रहते थे । जब आर्य इन इलाकों में आये तो धीरे-धीरे इन लोगों के साथ घुल मिल गये ।

उस समय के बारे में हमें आर्यों के द्वारा रची गई कविताओं से पता चलता है । ये कवितायें ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद कहलाती हैं । (यह तुम जानते हो कि पशु पालन के दिनों में जो वेद रचा गया था उसे हम रिगवेद कहते हैं ।) बाद के इन वेदों को पढ़कर यह भी लगता है कि इन दिनों आर्य जन ज्यादा खेती करने लगे थे ।

ऐसा क्यों लगता है ?

रिगवेद में गायों के बारे में बहुत सी बातें कही गईं । खेती के बारे में बहुत कम चर्चा है ।

पर, बाद के वेदों में खेती को लेकर बहुत सी बातों का जिक्र मिलता है । कहीं यह कहा गया है, धान, गेंहू, तिल, सरसों, दाल की फसल होती है । कहीं ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करी गई है कि अच्छी वर्षा हो और अच्छी धूप खिले तो फसल बढ़िया पैदा हो । कई जोड़ी बैलों से हल जोतने की बात भी इन वेदों में मिलती है ।

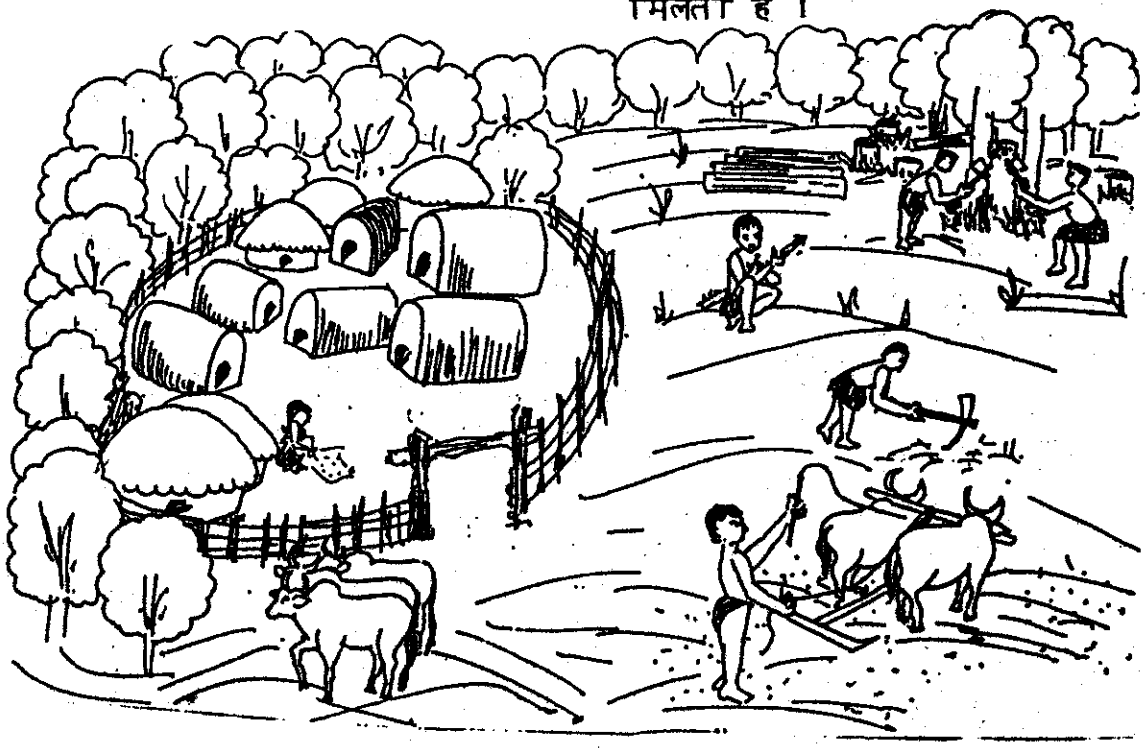

तो इस समय आर्य जनों के लिए खेती बहुत महत्त्वपूर्ण होने लगी थी । गाय वे अब भी पालते थे । पर पहले उनका पूरा रहन - सहन गाय पर निर्भर था । अब उनका जीवन खेती के सहारे चलने लगा ।

जब पशुपालन के सहारे थे, आर्य जन एक जगह बहुत दिनों तक बसकर नहीं रहते थे। चारे-पानी की तलाश में घूमना पड़ता था। पर क्या अब भी यह जरूरी था ?

खेती करने पर क्या जगह-जगह घूमने की जरूरत होती है ?

अब वे जंगल काटकर, या जलाकर, जमीन साफ करने लगे । जमीन पर उन्होंने खेती की । खेतों के पास गांव बनाकर बस गए ।

हर जन का एक खास बसने का इलाका था । जिस इलाके में किसी जन के परिवार जंगल साफ कर के अपने गांव व खेत बना लेते - वो इलाका उस जन का जनपद कहलाता ।

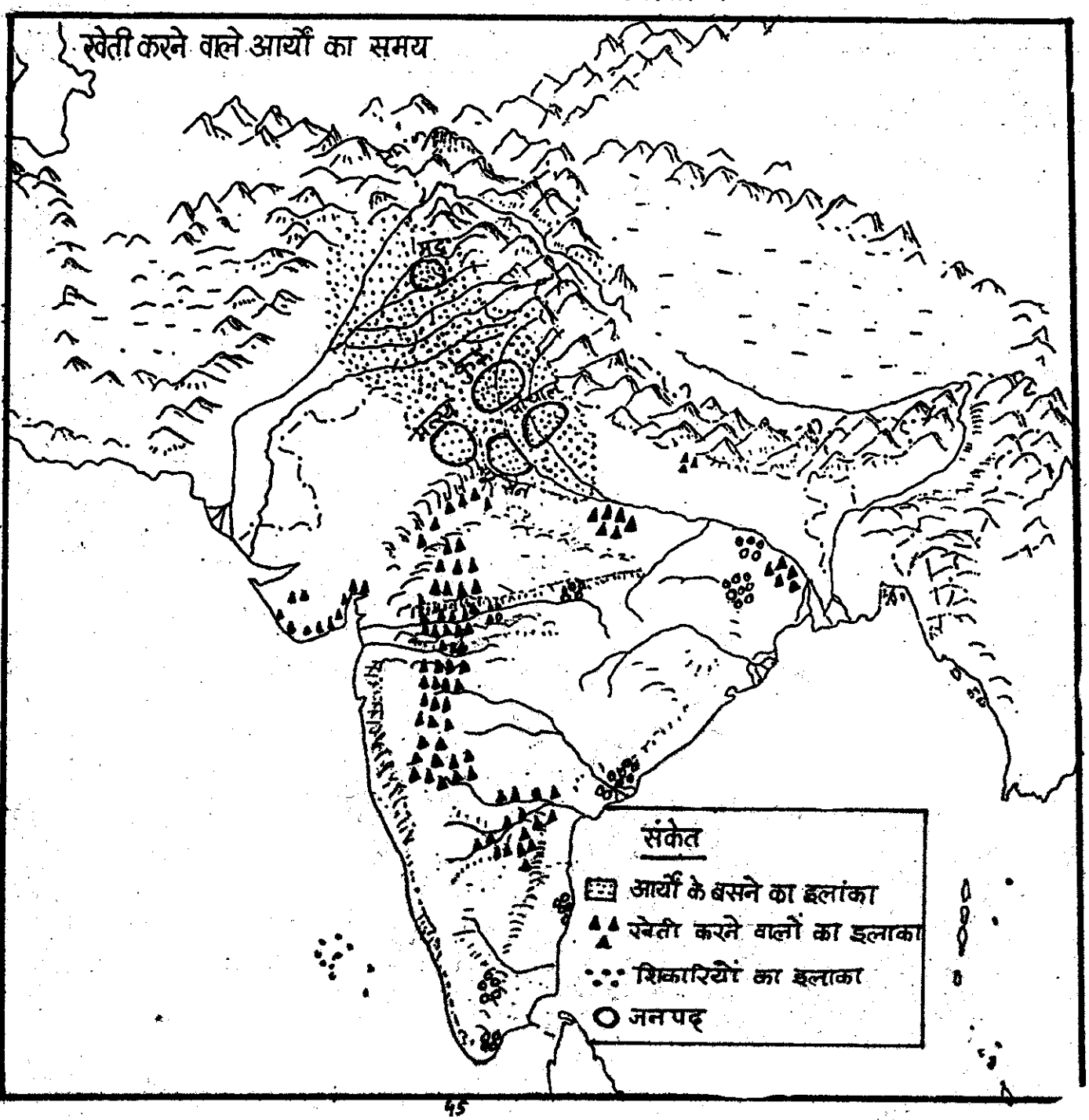

जनपद का मतलब ही है जन के बसने की जगह। हर जनपद में कई गांव होते । कुरु-जन के परिवारों ने जिस इलाके में गांव बसाएं वो कुरु जनपद कहलाया । नक्शे में तुम्हें और कौन-कौन से जनपद दिखते हैं ?

पशुपालन के दिनों में जनपद क्यों नहीं बने थे ?

क्या तब एक जन के लोग एक ही इलाके में बसकर रह जाते थे ?

कई बार जनपदों के बीच युद्ध छिड़ जाया करते थे । एक जनपद के लोग दूसरे जनपद की जमीन पर खेती करने की कोशिश करते। उनकी जमीन पर अपने गांव बसाना चाहते। इस कारण युद्ध हो जाता ।

कई बार एक जनपद के लोग दूसरे जनपद की पशु ही लूटकर ले आते और युद्ध छिड़ जाता। पशुपालन के दिनों में भी क्या इन्हीं कारणों से लड़ाई हुआ करती थी ? क्या कोई फर्क नज़र आता है तुम्हें ?

पहले की तरह ही जन के लोग राजन्यों और राजा के नेतृत्व में लड़ने जाते थे ।

इन दिनों लोहे के हथियारों से लड़ाई की जाती थी । याद करो पहले हथियार ----के बने होते थे । इन दिनों दूर-दूर से लोहा मंगवाया जाता था । लोहे के हथियार ज्यादा मजबूत होते थे ।

लड़ाई में जीत कर या नए इलाकों में जाकर --लोगों ने खेती बढ़ाई और नए गांव बसाए धीरे-धीरे काफी अनाज पैदा होने लगा । जन के लोग खेती बाड़ी के बारे में बहुत सी बातें सीखने लगे, समझने लगे । गाँव के कई परिवार खेती का काम करते थे ।

और कई परिवार लोगों के उपयोग की दूसरी चीजें बनाया करते थे । इस समय मिट्टी के सुन्दर बर्तन बनाने वाले कुम्हार थे । तांबे की चीजें बनाने वाले कारीगर थे । कुछ लोग लोहे के हथियार बनाते थे । उस समय के राजा और राजन्य लोहे के भाला, तीर आदि इस्तेमाल करते थे । रथ बनाने वाले बढ़ई तो पहले से थे । सोने चांदी के गहने बनाने वाले सोनार भी थे ।

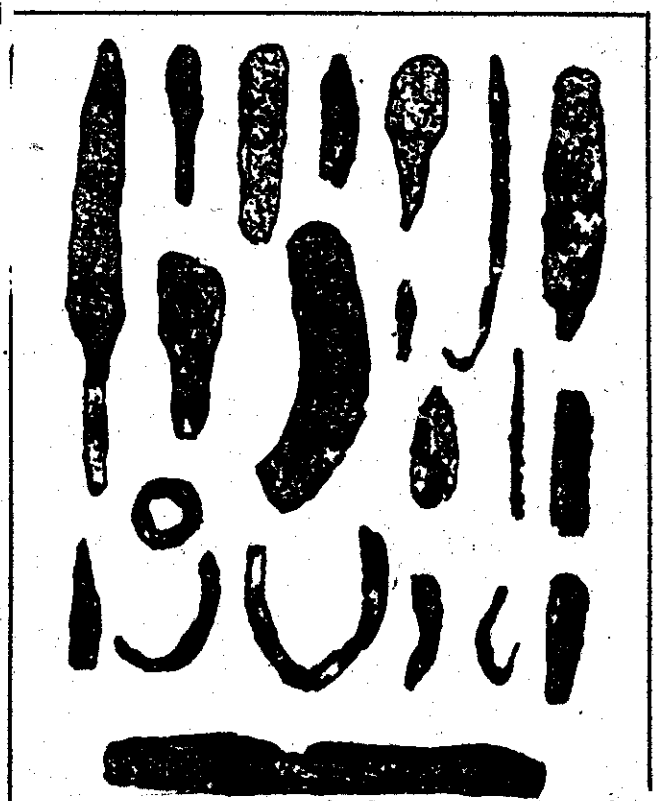

खेती करने वाले आर्यों के मिट्टी के बर्तन और लोहे के हथियार ।

इस समय की किताबों को पढ़कर यह भी पता चलता है कि इन दिनों राजा और राजन्य खेती और पशुपालन के काम में भाग नहीं लेते थे। फिर उनका गुजारा कैसे होता था ?

इस समय की किताबों में लिखा है कि जैसे हिरण का भोजन घास है वैसे ही राजा और राजन्यों का भोजन खेती करने वाले लोग हैं।

ऐसी बातों से पता चलता है कि इन दिनों राजा और राजन्य खेती करने वाले परिवारों से उनकी फसल का एक हिस्सा बलि के रूप में मांगने लगे थे।

मगर पशुपालक आर्यों के समय में ऐसा नहीं था। उस समय राजा और राजन्य के परिवारों में भी गाय व घोड़े पाले जाते थे। और राजा लोगों से बलि की मांग नहीं करता था। पशुपालन के दिनों में बलि कैसे दी जाती थी, ध्यान करो।

ये भी याद करो कि तब बलि में मिली चीजों का राजा क्या उपयोग करता था ?

इन दिनों बलि में मिले सामान से राजा बहुत ठाठ-बाठ से बड़े-बड़े यज्ञ भी करवाने लगे। जैसे अश्वमेध यज्ञ, राजसूय यज्ञ जिन्हें करने में कई महीने लग जाते थे। इनमें सैकड़ों गायों की बलि चढ़ाई जाती थी। इन यज्ञों में ब्राह्मण देवताओं से प्रार्थना करते थे कि राजा को अपार शक्ति मिले। ऐसा माना जाता था कि यज्ञों से प्रसन्न होकर ईश्वर राजा को बहुत शक्तिशाली बनाएंगे।

यज्ञ करवाने के बदले राजा ब्राह्मणों को खूब गाए, अनाज, सोना, दास-दासी दक्षिणा में देते थे। पहले की तरह राजन्यों को भी बलि में मिली चीजों का कुछ भाग दिया जाता था। यज्ञ के अवसर पर राजा जन के सब लोगों को भोजन करवाता था।

ब्राहमण इन दिनों बहुत महत्वपूर्ण होने लगे थे। वे बताने लगे कि लोगों को कैसे जीना चाहिए। उन्होंने कहा कि जो खेती करने वाले परिवार हैं उन्हें अनाज उगाना चाहिए और राजा को बलि देनी चाहिए। यही उनका काम है। इन परिवारों को ब्राहमणों ने "वैश्य" नाम दिया।

इसी तरह उन्होंने कहा कि राजा राजन्यों के परिवारों को युद्ध करना चाहिए। यही उनका काम है। ऐसे परिवारों को उन्होंने क्षत्रिय नाम दिया।

उन्होंने ब्राहमणों का काम यज्ञ, प्रार्थना करवाना बताया।

उन दिनों शायद कुछ लोग राजा, राजन्यों और ब्राहमणों के यहां काम किया करते थे। युद्ध में हारे हुए लोगों को कभी-कभी ऐसे काम करना पड़ता था। ब्राहमणों ने कहा कि वे लोग जो दूसरों के लिए काम करते हैं, दूसरों की सेवा करते हैं, वे शूद्र हैं। दूसरों की सेवा करना ही उनका काम है। ऐसा भी हो सकता है कि उन दिनों जो कुम्हार, लोहार जैसे कारीगर थे-- उन्हें भी ब्राहमण शूद्र कहते थे।

हो सकता है उन दिनों कई लोग इन बातों को ठीक समझने लगे हों और कुछ लोग नहीं।

राजा राजन्य और ब्राहमण बहुत शक्तिशाली और महत्वपूर्ण थे। उन्होंने "वैश्यों" से बराबरी से हिलना-मिलना कम कर दिया। उनके अनुसार वैश्यों का काम सिर्फ अनाज उगाना, राजा को बलि देना और ब्राहमणों को दक्षिणा देना था। यज्ञ आदि में वैश्यों को थोड़ा अलग रखा जाने लगा।

यह सब पशुपालन के दिनों से काफी अलग था। ध्यान करो, उन दिनों सभा व यज्ञ में जन के सब लोग कैसे भाग लेते थे।

इस तरह समाज में छोटी-छोटी चीजें बदलने लगीं।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१. नीचे दिए वाक्यों में खाली स्थान भरो-

पहले जब आर्य लोग सिर्फ गाय बछड़े पालकर जीते थे, तब वे _दूध_, _____, _____, _____ खाया करते थे। जब वे खेती करने लगे तब _अनाज_, _____, _____ ज्यादा खाने लगे। पहले जब वे पशु नहीं पालते थे, जन के सब आदमी गाय नहलाने, _____, _____, _____ का काम किया करते होंगे। जब वे खेती करने लगे तब खेत जोतना, _____, _____, _____, _____ का काम ज्यादा करने लगे। पहले के दिनों में जन की औरतें दूध दुहने _____, _____, _____ का काम किया करती होंगी। अब वे अनाज बीनने, _____, _____ का काम भी करने लगी होंगी।

2• खेती करने वाले आर्य किन कारणों से लड़ते थे ?

3• खेती करने वाले आर्यों के समय में -

क- बलि हर महीने दी जाती थी.

ख- जन के लोग राजा से खुश होकर कभी-कभी बलि दे आया करते थे.

ग- राजा हर फसल पर बलि मांगने लगा.

घ- बलि नहीं देने वालों को राजा दण्ड देता था.

4• ब्राह्मणों के अनुसार "शूद्र" और "वैश्य" कौन थे ? और उनके काम क्या थे ?

5• एक मजेदार तुलना

तुमने अलग-अलग लोगों के बारे में पढ़ा । उनके भोजन के बारे में जाना । भोजन मनुष्य के लिए बहुत जरूरी चीज है । हमारे भोजन में कई ऐसी चीजें होती हैं जो जल्दी सड़ जाती हैं । और कई चीजें काफी दिनों तक बची रहती हैं । जोड़-जोड़ कर, उनका भंडार बनाया जा सकता है । ऐसी चीजों को काफी मात्रा में इक्ट्ठा किया जा सकता है ।

इस दृष्टि से तुम शिकारी मानव, पशुपालक आर्य और खेती करने वाले आर्यों को देखो तो किस के भोजन में जोड़ के रखने लायक चीजें ज्यादा थीं ? हरेक के भोजन की सूचि बनाकर तुलना करो ।

इतिहास के पाठों में जो चित्र बने हैं वे हमने बनाए हैं।
जितने पुराने समय की हम बात कर रहे हैं तबके लोग अपने कोई चित्र छोड़कर गए नहीं। उन्होंने चित्र छोड़े भी हों तो वे हमें नहीं मिलते।

आर्यों के बारे में जो भी बातें हम पता कर सके उनपर सोचकर और कुछ कल्पना करकर ये चित्र तुम्हारे लिए बनाए हैं।
जैसे, हमें ये पता है कि वे रथ की सवारी करते थे। पर क्या उनके रथ वैसे दिखते थे जैसा हमने चित्र में दिखाया है ?
ये हम नहीं कह सकते।
तो इन चित्रों को तुम सचमुच के मत समझना।

भारत की नदियां

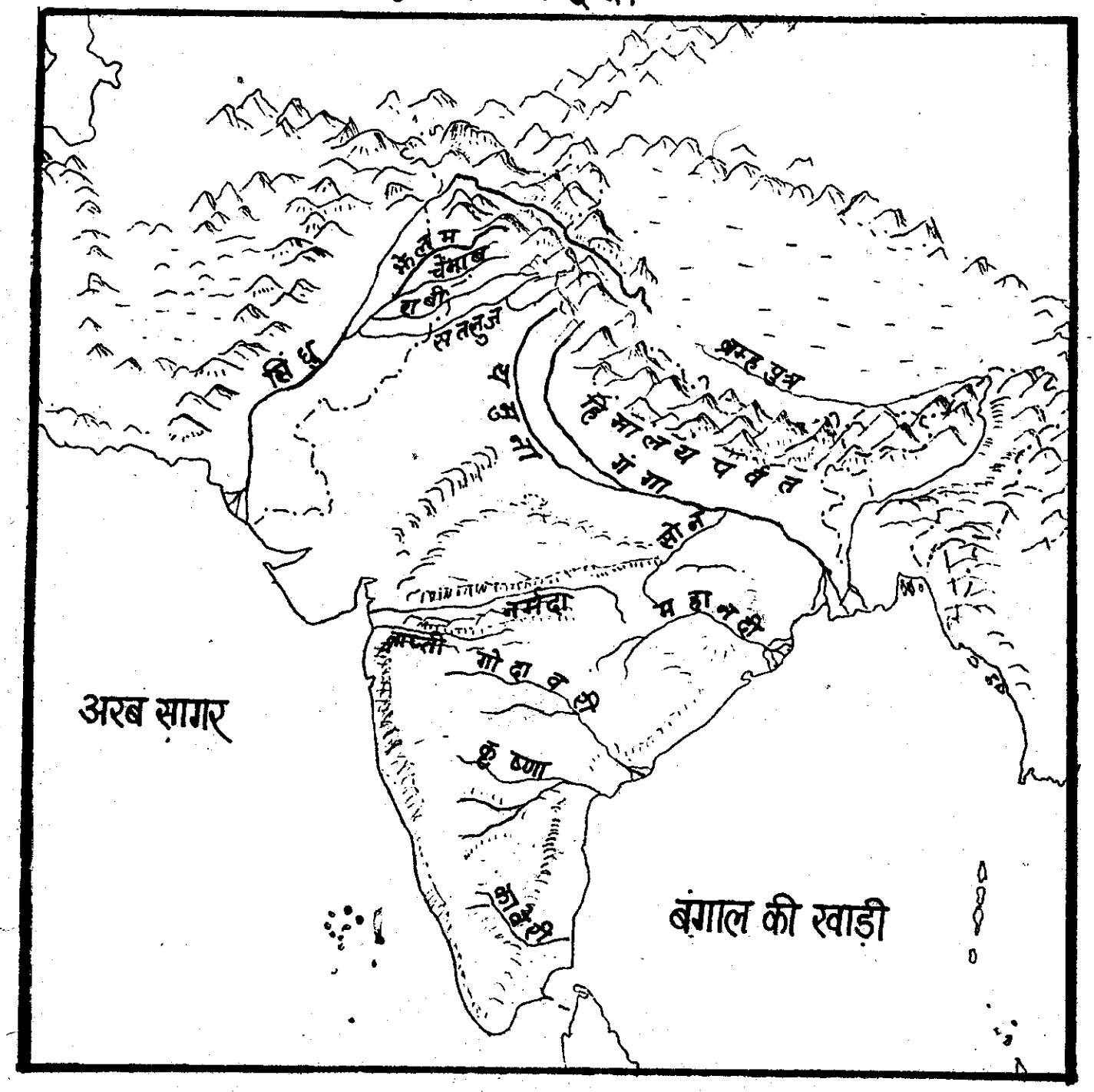
झेलम
चेनाब
रावी
सतलुज
सिंधु
ब्रह्मपुत्र
हिमालय पर्वत
गंगा
यमुना
सोन
नर्मदा
महानदी
ताप्ती
गोदावरी
कृष्णा
कावेरी
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी

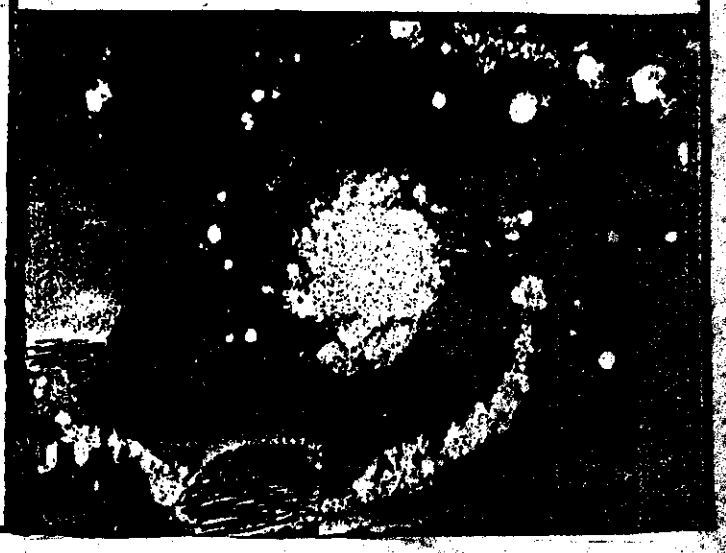

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, मध्यप्रदेश का यह प्रयोग है।
पाठ्य सामग्री तैयार की है 'एकलव्य' संस्था और उससे जुड़े कई साथियों ने।

चित्रांकन : आशा शर्मा
नक्शे : बुलबुल
मुखपृष्ठ : 'देश का पर्यावरण' से साभार
मुद्रक : भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल